بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ۚ﴿١﴾

1. येह लोग आपस में किस चीज़ से मु-त-अ़ल्लिक़ सवाल करते हैं।

عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ۙ﴿٢﴾

2. (क्या) उस अ़ज़ीम ख़बर से मु-त-अ़ल्लिक़ (पूछ गछ कर रहे हैं)?

الَّذِىْ هُمْ فِيْهِ مُخْتَلِفُوْنَ ؕ﴿٣﴾

3. जिस के बारे में वोह इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं।

كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ۙ﴿٤﴾

4. हरगिज़ (वोह ख़बर लाइक़े इन्कार) नहीं वोह अ़नक़रीब (उस ह़क़ीक़त को) जान जाएंगे।

ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ﴿٥﴾

5. (हम) फिर (केहते हैं : इख़्तिलाफ़ो इन्कार) हरगिज़ (दुरुस्त) नहीं वोह अ़नक़रीब जान जाएंगे।

اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ مِهٰدًا ۙ﴿٦﴾

6. क्या हमने ज़मीन को (ज़िन्दगी के) क़ियाम और कसबो अ़मल की जगह नहीं बनाया?

وَّالْجِبَالَ اَوْتَادًا ۖ﴿٧﴾

7. और (क्या) पहाड़ों को (उसमें) उभार कर खड़ा (नहीं) किया?

وَّخَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا ۙ﴿٨﴾

8. और (ग़ौर करो) हमने तुम्हें (फ़रोगे़ नस्ल के लिए) जोड़ा जोड़ा पैदा फ़रमाया (है)।

وَّجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ۙ﴿٩﴾

9. और हमने तुम्हारी नींद को (जिस्मानी) राह़त (का सबब) बनाया (है)।

وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ۙ﴿١٠﴾

10. और हमने रात को (उसकी तारीकी के बाइ़स) पर्दह पोश बनाया (है)।

وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ۖ﴿١١﴾

11. और हमने दिन को (कसबे) मआ़श (का वक़्त) बनाया (है)।

وَّ بَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ﴿١٢﴾

12. और (अब ख़लाई काइनात में भी ग़ौर करो) हमने तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत (तब्क़ात) बनाए।

وَّ جَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ﴿١٣﴾

13. और हमने सूरज को रौशनी और हरारत का (ज़बरदस्त) मंबा' बनाया।

وَّ اَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ﴿١٤﴾

14. और हमने भरे बादलों से मूसलाधार पानी बरसाया।

لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّ نَبَاتًا ﴿١٥﴾

15. ताकि हम उस (बारिश) के ज़रीए (ज़मीनसे) अनाज और सब्ज़ा निकालें।

وَّ جَنّٰتٍ اَلْفَافًا ﴿١٦﴾

16. और घने घने बाग़ात (उगाएं)।

اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ﴿١٧﴾

17. (हमारी क़ुदरत की इन निशानियों को देख कर जान लो कि) बेशक फ़ैसले का दिन (क़ियामत भी) एक मुक़र्ररह वक़्त है।

يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ﴿١٨﴾

18. जिस दिन सूर फूंका जाएगा तो तुम गिरोह दर गिरोह (अल्लाह के हुज़ूर) चले आओगे।

وَّ فُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ﴿١٩﴾

19. और आस्मान (के तब्क़ात) फाड़ दिए जाएंगे तो (फटने के बाइस गोया) वोह दरवाज़े ही दरवाज़े हो जाएंगे।

وَّ سُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ﴿٢٠﴾

20. और पहाड़ (ग़ुबार बना कर फ़िज़ामें) उड़ा दिए जाएंगे, सो वोह सुराब (की तरह कल-अदम) हो जाएंगे।

اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ﴿٢١﴾

21. बेशक दोज़ख एक घात है।

لِّلطّٰغِيْنَ مَاٰبًا ﴿٢٢﴾

22. (वोह) सरकशों का ठिकाना है।

لّٰبِثِيْنَ فِيْهَآ اَحْقَابًا ﴿٢٣﴾

23. वोह ख़त्म न होनेवाली पय दर पय मुद्दतें उसी में पड़े रहेंगे।

لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّ لَا شَرَابًا ﴿٢٤﴾

24. न वोह उसमें (किसी क़िस्म की) ठंडक का मज़ा चखेंगे और न किसी पीने की चीज़ का।

إِلَّا حَمِيمًا وَّغَسَّاقًا ﴿٢٥﴾

25. सिवाए खौलते हुए गर्म पानी और (दोज़ख़ियों के ज़ख़्मों से) बेहते हुए पीप का।

جَزَآءً وِّفَاقًا ﴿٢٦﴾

26. (येही उन की सरकशी के) मुवाफ़िक़ बदला है।

إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ حِسَابًا ﴿٢٧﴾

27. इस लिए कि वोह क़त्अ़न हिसाबे (आख़िरत) का ख़ौफ़ नहीं रखते थे।

وَّكَذَّبُوا بِاٰيٰتِنَا كِذَّابًا ﴿٢٨﴾

28. और वोह हमारी आयतों को ख़ूब झुटलाया करते थे।

وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ كِتٰبًا ﴿٢٩﴾

29. और हमने हर (छोटी बड़ी) चीज़ को लिख कर महफ़ूज़ कर रखखा है।

فَذُوقُوا فَلَنْ نَّزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا ﴿٣٠﴾ ع ١

30. ऐ मुन्किरो!) अब तुम (अपने किए का) मज़ा चख्खो (तुम दुनिया में कुफ़्रो सरकशी में बढ़ते गए) अब हम तुम पर अ़ज़ाब ही को बढ़ाते जाएंगे।

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا ﴿٣١﴾

31. बेशक परहेज़गारों के लिए कामयाबी है।

حَدَآئِقَ وَاَعْنَابًا ﴿٣٢﴾

32. (उनके लिए) बाग़ात और अंगूर (होंगे)।

وَّكَوَاعِبَ اَتْرَابًا ﴿٣٣﴾

33. और जवां साल हम उ़म्र दोशीज़ाएं (होंगी)।

وَّكَاْسًا دِهَاقًا ﴿٣٤﴾

34. और शराबे तहूर के छलकते हुए जाम होंगे।

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَّلَا كِذّٰبًا ﴿٣٥﴾

35. वहां येह (लोग) न कोई बेहूदा बात सुनेंगे और न (एक दूसरे को) झुटलाना (होगा)।

جَزَآءً مِّنْ رَّبِّكَ عَطَآءً حِسَابًا ﴿٣٦﴾

36. येह आपके रब की तरफ़ से सिला है जो (आ'माल के हिसाब से) काफ़ी (बड़ी) अ़ता है।

رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ لَا يَمْلِكُونَ مِنْهُ خِطَابًا ﴿٣٧﴾

37. (वोह) आस्मानों और ज़मीन का और जो कुछ उन दोनों के दरमियान है (सब) का परवरदिगार है, बड़ी ही रह़मतवाला है (मगर रोज़े क़ियामत उस के रो'बो जलाल का आ़लम येह होगा कि) उस से बात करने का (मख़्लूक़ात में से) किसी को (भी) यारा न होगा।

يَوْمَ يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا ۙ لَّا يَتَكَلَّمُوْنَ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ﴿٣٨﴾

38. जिस दिन जिब्राईल (रूहुल अमीन) और (तमाम) फ़रिश्ते सफ़ बस्ता खड़े होंगे, कोई लब कुशाई न कर सकेगा, सिवाए उस शख़्स के जिसे ख़ुदाए रह्मानने इज़्ने शफ़ाअ़त दे रखखा था और उसने (ज़िन्दगीमें ता'लीमाते इस्लाम के मुताबिक़) बात भी दुरुस्त कही थी।

ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ مَاٰبًا ﴿٣٩﴾

39. येह रोज़े हक़्क़ है, पस जो शख़्स चाहे अपने रब के हुज़ूर (रह्मतो कुर्बत का) ठिकाना बना ले।

اِنَّآ اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا ۖ يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ وَيَقُوْلُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ تُرٰبًا ﴿٤٠﴾ ع ٢

40. बिला शुब्हा हमने तुम्हें अ़नक़रीब आनेवाले अ़ज़ाब से डरा दिया है, उस दिन हर आदमी उन (आ'माल) को जो उसने आगे भेजे हैं देख लेगा, और (हर) काफ़िर कहेगा : ऐ काश ! मैं मिट्टी होता (और इस अ़ज़ाब से बच जाता)।

रुकूआ़तुहा 2 | 79 सूरतुन नाज़िआ़ति मक्किय्यतुन 81 | आयातुहा 46

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ۙ ﴿١﴾

1. उन (फ़रिश्तों की) क़सम जो (काफ़िरों की जान उन के जिस्मों के एक एक अंग में से) निहायत सख़्ती से खींच लाते हैं।
(या – तवानाई की उन लह्रों की क़सम जो माद्दे के अंदर घुस कर कीमियाई जोड़ों को सख़्ती से तोड़ फोड़ देती हैं)।

وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ۙ ﴿٢﴾

2. और उन (फ़रिश्तों की) क़सम जो (मो'मिनों की जान के) बन्द निहायत नरमी से खोल देते हैं।
(या – तवानाई की उन लह्रों की क़सम जो माद्दे के अंदर से कीमियाई जोड़ों को निहायत नरमी और आराम से तोड़ देती हैं)।

وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ۙ﴿۳﴾

3. और उन (फ़रिश्तों) की क़सम जो (ज़मीनो आस्मान के दरमियान) तेज़ी से तैरते फिरते हैं।
(या - तवानाई की उन लहरों की क़सम जो आस्मानी ख़ला-व-फ़िज़ा में बिला रोक टोक चलती फिरती हैं)

فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ۙ﴿۴﴾

4. फिर उन (फ़रिश्तों)की क़सम जो लपक कर (दूसरों से) आगे बढ़ जाते हैं।
(या - फिर तवानाई की उन लहरों की क़सम जो रफ़्तार, ताक़त और जाज़िबिय्यत के लिहाज़ से दूसरी लहरों पर सब्क़त ले जाती हैं।

فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ۘ﴿۵﴾ وقف لازم

5. फिर उन (फ़रिश्तों) की क़सम जो मुख़्तलिफ़ उमूर की तदबीर करते हैं।
(या - फिर तवानाई की उन लहरों की क़सम जो बाहमी तआ़मुल से काइनाती निज़ाम की बक़ा के लिए तवाज़ुनो तद्बीर क़ाइम रखती हैं)।

يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۙ﴿۶﴾

6. जब उन्हें इस निज़ामे काइनात के दरहम बरहम कर देने का हुक्म होगा तो) उस दिन (काइनात की) हर मु-तहर्रिक चीज़ शदीद ह़रकत में आ जाएगी।

تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ؕ﴿۷﴾

7. पीछे आनेवाला एक और ज़ल्ज़ला उसके पीछे आएगा।

قُلُوْبٌ يَّوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ۙ﴿۸﴾

8. उस दिन (लोगों के) दिल ख़ौफ़ो इज़्तिराब से धड़कते होंगे।

اَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۘ﴿۹﴾ وقف لازم

9. उनकी आँखें (ख़ौफ़ो हैबत) से झुकी होंगी।

يَقُوْلُوْنَ ءَاِنَّا لَمَرْدُوْدُوْنَ فِي الْحَافِرَةِ ؕ﴿۱۰﴾

10. (कुफ़्फ़ार) केहते हैं : क्या हम पहली ज़िन्दगी की तरफ़ पल्टाए जाएंगे?

ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ؕ﴿۱۱﴾

11. क्या जब हम बोसीदह (खोखली) हड्डियां हो जाएंगे (तब भी ज़िन्दा किए जाएंगे?

قَالُوْا تِلْكَ اِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ﴿١٢﴾

12. वोह केहते हैं : येह (लौटना) तो उस वक़्त बड़े ख़सारे का लौटना होगा।

فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ ﴿١٣﴾

13. फिर तो येह एक ही बार शदीद हैबतनाक आवाज़ के साथ (काइनात के तमाम अजराम का) फट जाना होगा।

فَاِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ﴿١٤﴾

14. फिर वोह (सब लोग) यकायक खुले मैदाने (हश्र)में आ मौजूद होंगे।

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ﴿١٥﴾

15. क्या आपके पास मूसा (علیہ السلام) की ख़बर पहुंची?

اِذْ نَادٰىهُ رَبُّهٗ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٦﴾

16. जब उनके रबने तुवा की मुक़द्दस वादी में उन्हें पुकारा था।

اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿١٧﴾

17. (और हुक्म दिया था कि) फ़िरऔन के पास जाओ वोह सरकश हो गया है।

فَقُلْ هَلْ لَّكَ اِلٰٓى اَنْ تَزَكّٰى ﴿١٨﴾

18. फिर (उस से) कहो : क्या तेरी ख़्वाहिश है कि तू पाक हो जाए?

وَاَهْدِيَكَ اِلٰى رَبِّكَ فَتَخْشٰى ﴿١٩﴾

19. और (क्या तू चाहता है कि) मैं तेरे रब की तरफ़ तेरी रहनुमाई करूं ताकि तू (उस से) डरने लगे?

فَاَرٰىهُ الْاٰيَةَ الْكُبْرٰى ﴿٢٠﴾

20. फिर मूसा (علیہ السلام) ने उसे बड़ी निशानी दिखाई।

فَكَذَّبَ وَعَصٰى ﴿٢١﴾

21. तो उसने झुटला दिया और नाफ़रमानी की।

ثُمَّ اَدْبَرَ يَسْعٰى ﴿٢٢﴾

22. फिर वोह (हक़ से) रू गर्दां हो कर (मूसा علیہ السلام की मुख़ालिफ़त में) सअ़-यो काविश करने लगा।

فَحَشَرَ فَنَادٰى ﴿٢٣﴾

23. फिर उसने (लोगों को) जमा' किया और पुकारने लगा।

فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى ﴿٢٤﴾

24. फिर उसने कहा : मैं तुम्हारा सब से बुलन्दो बाला रब हूं।

فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى ﴿٢٥﴾

25. तो अल्लाहने उसे आख़िरत और दुनिया की (दोहरी) सज़ा में पकड़ लिया।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَن يَخْشَىٰ ٢٦

26. बेशक इस वाक़िए में उस शख़्स के लिए बड़ी इ़ब्रत है जो (अल्लाह से) डरता है।

ءَأَنتُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمِ السَّمَاءُ ۚ بَنَاهَا ٢٧

27. क्या तुम्हारा पैदा करना ज़ियादा मुश्किल है या (पूरी) समावी काइनात का, जिसे उसने बनाया ?

رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوَّاهَا ٢٨

28. उसने आस्मान के तमाम कुर्रों (सितारों) को फ़िज़ाए बसीत में पैदा कर के) बुलन्द किया, फिर उन (तरकीबो तश्कील और अफ़्आ़लो हरकात) में ए'तिदाल, तवाज़ुन और इस्तेह्काम पैदा कर दिया।

وَأَغْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضُحَاهَا ٢٩

29. और उसीने आस्मानी ख़ला की रात को (या'नी सारे ख़लाई माहौल को मिस्ले शब) तारीक बनाया, और (इस ख़ला से) उन (सितारों) की रौशनी (पैदा कर के) निकाली।

وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَٰلِكَ دَحَاهَا ٣٠

30. और उसी ने ज़मीन को इस (सितारे-सूरज के वजूद में आ जाने) के बाद (इस से) अलग कर के ज़ोर से फेंक दिया (और इसे क़ाबिले सताइश बनाने के लिए बिछा दिया)।

أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْعَاهَا ٣١

31. उसी ने ज़मीन में से उसका पानी (अलग) निकाल लिया और (बक़िय्या खुश्क क़त्आ़त में) उसकी नबातात निकालीं।

وَالْجِبَالَ أَرْسَاهَا ٣٢

32. और उसीने (बा'ज़ माद्दों को बाहम मिला कर) ज़मीन से मुह्कम पहाड़ों को उभार दिया।

مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ٣٣

33. (येह सब कुछ) तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के फ़ाइदे के लिए (किया)।

فَإِذَا جَاءَتِ الطَّامَّةُ الْكُبْرَىٰ ٣٤

34. फिर उस वक़्त (काइनात के) बढ़ते बढ़ते (उस की इन्तिहा पर) हर चीज़ पर ग़ालिब आ जानेवाली बहुत सख़्त आफ़ते (क़ियामत) आएगी।

يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنسَانُ مَا سَعَىٰ ٣٥

35. उस दिन इन्सान अपनी (हर) कोशिशो अ़मल को याद करेगा।

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيمُ لِمَن يَرَىٰ ٣٦

36. और हर देखनेवाले के लिए दोज़ख़ ज़ाहिर कर दी जाएगी।

فَاَمَّا مَنۡ طَغٰى ۙ﴿۳۷﴾

37. फिर जिस शख़्सने सरकशी की होगी।

وَاٰثَرَ الۡحَيٰوةَ الدُّنۡيَا ۙ﴿۳۸﴾

38. और दुन्यावी ज़िन्दगी को (आख़िरत पर) तरजीह दी होगी।

فَاِنَّ الۡجَحِيۡمَ هِىَ الۡمَاۡوٰى ؕ﴿۳۹﴾

39. तो बेशक दोज़ख़ ही (उस का) ठिकाना होगा।

وَاَمَّا مَنۡ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفۡسَ عَنِ الۡهَوٰى ۙ﴿۴۰﴾

40. और जो शख़्स अपने रब के हुज़ूर खड़ा होने से डरता रहा और उसने (अपने) नफ़्स को (बुरी) ख़्वाहिशातो शह्वात से बाज़ रखा।

فَاِنَّ الۡجَنَّةَ هِىَ الۡمَاۡوٰى ؕ﴿۴۱﴾

41. तो बेशक जन्नत ही (उस का) ठिकाना होगा।

يَسۡـَٔلُوۡنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرۡسٰٮهَا ؕ﴿۴۲﴾

42. (कुफ़्फ़ार) आप से क़ियामत के बारे में पूछते हैं कि उस का वुक़ूअ़ कब होगा।

فِيۡمَ اَنۡتَ مِنۡ ذِكۡرٰٮهَا ؕ﴿۴۳﴾

43. तो आपको उसके (वक़्त के) ज़िक्र से क्या ग़रज़?

اِلٰى رَبِّكَ مُنۡتَهٰٮهَا ؕ﴿۴۴﴾

44. उसकी इन्तिहा तो आप के रब तक है (या'नी इब्तिदा की तरह इन्तिहा में भी सिर्फ़ वहदत रेह जाएगी)।

اِنَّمَاۤ اَنۡتَ مُنۡذِرُ مَنۡ يَّخۡشٰٮهَا ؕ﴿۴۵﴾

45. आप तो महज़ उस शख़्स को डर सुनानेवाले हैं जो उस से ख़ाइफ़ है।

كَاَنَّهُمۡ يَوۡمَ يَرَوۡنَهَا لَمۡ يَلۡبَثُوۡۤا اِلَّا عَشِيَّةً اَوۡ ضُحٰٮهَا ؏﴿۴۶﴾

ع ۲ ۲۰ ۴

46. गोया वोह जिस दिन उसे देख लेंगे तो (येह ख़याल करेंगे कि) वोह (दुनिया में) एक शाम या उस की सुब्ह के सिवा ठहरे ही न थे।

आयातुहा 42 | 80 सूरतु अ-ब-स मक्किय्यतुन 24 | रुकूउहा 1

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमाने वाला है।

عَبَسَ وَتَوَلّٰٓى ۙ﴿۱﴾

1. उनके चेह्रए (अक़्दस) पर ना गवारी आई और रुख़े (अनवर) मोड़ लिया।

اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ﴿٢﴾

2. इस वजह से कि उनके पास एक नाबीना आया (जिसने आपकी बात को टोका)।

وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ يَزَّكّٰٓى ﴿٣﴾ۙ

3. और आपको क्या ख़बर शायद वोह (आपकी तवज्जोह से मज़ीद) पाक हो जाता।

اَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى ﴿٤﴾

4. या (आपकी) नसीह़त क़ुबूल करता तो नसीह़त उसको (और) फ़ाइदा देती।

اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى ﴿٥﴾ۙ

5. लेकिन जो शख़्स (दीन से) बे परवाह है।

فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰى ﴿٦﴾

6. तो आप उसके (क़ुबूले इस्लाम के) लिए ज़ियादह एहतिमाम फ़रमाते हैं।

وَمَا عَلَيْكَ اَلَّا يَزَّكّٰى ﴿٧﴾

7. ह़ालांकि आप पर कोई ज़िम्मेदारी (का बोझ) नहीं अगरचे वोह पाकीज़गी (ईमान) इख़्तियार भी न करे।

وَاَمَّا مَنْ جَآءَكَ يَسْعٰى ﴿٨﴾ۙ

8. और वोह जो आपके पास (ख़ुद तलबे ख़ैर की) कोशिश करता हुआ आया।

وَهُوَ يَخْشٰى ﴿٩﴾ۙ

9. और वोह (अपने रब से) डरता भी है।

فَاَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰى ﴿١٠﴾ۚ

10. तो आप उससे बे त-वज्जोही फ़रमा रहे हैं।

كَلَّآ اِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ﴿١١﴾ۚ

11. (ऐ ह़बीबे मुकर्रम!) यूं नहीं बेशक येह (आयाते क़ुरआनी) तो नसीह़त हैं।

فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ﴿١٢﴾

12. जो शख़्स चाहे उसे क़ुबूल (व अज़बर) कर ले।

فِيْ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ﴿١٣﴾ۙ

13. (येह) मुअ़ज़्ज़ज़ो-मुकर्रम औराक़में (लिखी हुई) हैं।

مَّرْفُوْعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ﴿١٤﴾ۙ

14. जो निहायत बुलंद मर्तबा (और) पाकीज़ा हैं।

بِاَيْدِيْ سَفَرَةٍ ﴿١٥﴾ۙ

15. ऐसे सफ़ीरों (और कातिबों) के हाथों से (आगे पहुंची) हैं।

كِرَامٍۢ بَرَرَةٍ ﴿١٦﴾ؕ

16. जो बड़े साह़िबाने करामत (और) पैकराने ताअ़त हैं।

وقف لازم

قُتِلَ الْاِنْسَانُ مَآ اَكْفَرَهٗ ﴿۱۷﴾

17. हलाक हो (वोह बद बख़्त मुन्किर) इन्सान कैसा ना शुक्रा है (जो इतनी अज़ीम ने'मत पा कर भी उसकी क़द्र नहीं करता)।

مِنْ اَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ ﴿۱۸﴾

18. अल्लाहने उसे किस चीज़ से पैदा फ़रमाया है।

مِنْ نُّطْفَةٍ ؕ خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ ﴿۱۹﴾

19. नुत्फ़ेमें से उसको पैदा फ़रमाया, फिर साथ ही उसका (ख़वासो जिन्स के लिहाज़ से) तअ़य्युन फ़रमा दिया।

ثُمَّ السَّبِيْلَ يَسَّرَهٗ ﴿۲۰﴾

20. फिर (तश्कील, इर्तिक़ा और तक्मील के बाद ब-तने मादर से निकलने की) राह उसके लिए आसान फ़रमा दी।

ثُمَّ اَمَاتَهٗ فَاَقْبَرَهٗ ﴿۲۱﴾

21. फिर उसे मौत दी, फिर उसे क़ब्रमें (दफ़्न) कर दिया गया।

ثُمَّ اِذَا شَآءَ اَنْشَرَهٗ ﴿۲۲﴾

22. फिर जब वोह चाहेगा उसे (दोबारा ज़िन्दा कर के) खड़ा करेगा।

كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَآ اَمَرَهٗ ﴿۲۳﴾

23. यक़ीनन उस (ना फ़रमान इन्सान) ने वोह (हक़) पूरा न किया जिसका उसे (अल्लाहने) हुक्म दिया था।

فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ اِلٰى طَعَامِهٖٓ ﴿۲۴﴾

24. पस इन्सान को चाहिए कि अपनी ग़िज़ा की तरफ़ देखे (और ग़ौर करे)।

اَنَّا صَبَبْنَا الْمَآءَ صَبًّا ﴿۲۵﴾

25. बेशक हमने ख़ूब ज़ोर से पानी बरसाया।

ثُمَّ شَقَقْنَا الْاَرْضَ شَقًّا ﴿۲۶﴾

26. फिर हमने ज़मीन को फाड़ कर चीर डाला।

فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا حَبًّا ﴿۲۷﴾

27. फिर हमने उसमें अनाज उगाया।

وَّعِنَبًا وَّقَضْبًا ﴿۲۸﴾

28. और अंगूर और तरकारी।

وَّزَيْتُوْنًا وَّنَخْلًا ﴿۲۹﴾

29. और ज़ैतून और खजूर।

وَّحَدَآئِقَ غُلْبًا ﴿۳۰﴾

30. और घने घने बाग़ात।

وَّفَاكِهَةً وَّاَبًّا ﴿۳۱﴾

31. और (तरह तरह के) फल मेवे और (जानवरों का) चारा।

مَّتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ﴿۳۲﴾

32. खुद तुम्हारे और तुम्हारे मवेशियों के लिए मताए (ज़ीस्त)।

فَاِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ ﴿٣٣﴾

33. फिर जब कान फाड़ देनेवाली आवाज़ आएगी।

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ ﴿٣٤﴾ لا

34. उस दिन आदमी अपने भाई से भागेगा।

وَاُمِّهٖ وَاَبِيْهِ ﴿٣٥﴾ لا

35. और अपनी मां से और अपने बाप से (भी)।

وَصَاحِبَتِهٖ وَبَنِيْهِ ﴿٣٦﴾ ط

36. और अपनी बीवी और अपनी औलाद से (भी)।

لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَاْنٌ يُّغْنِيْهِ ﴿٣٧﴾ ط

37. उस दिन हर शख़्स को ऐसी (परेशान कुन) हालत लाहिक़ होगी जो उसे (हर दूसरे से) बे-परवाह कर देगी।

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ﴿٣٨﴾ لا

38. उसी दिन बहुत से चेहरे (ऐसे भी होंगे जो नूर से) चमक रहे होंगे।

ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ﴿٣٩﴾ ج

39. (वोह) मुस्कुराते हंसते (और) खुशियां मनाते होंगे।

وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ﴿٤٠﴾ لا

40. और बहुतसे चेहरे ऐसे होंगे जिन पर उस दिन गर्द पड़ी होगी।

تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ﴿٤١﴾ ط

41. (मज़ीद) उन (चेहरों) पर सियाही छाई होगी।

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ﴿٤٢﴾ ع ١ ٤٢ ٥

42. येही लोग काफ़िर(और) फ़ाजिर (बद किर्दार) होंगे।

आयातुहा 29 | 81 सूरतुत तकवीर मक्किय्यतुन 7 | रुकूउहा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ् जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमाने वाला है।

اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ﴿١﴾ ط

1. जब सूरज लपेट कर बे नूर कर दिया जाएगा।

وَاِذَا النُّجُوْمُ انْكَدَرَتْ ﴿٢﴾ ط

2. और जब सितारे (अपनी कहकशाओं से) गिर पड़ेंगे।

وَاِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ﴿٣﴾ ط

3. और जह पहाड़ (गुबार बना कर फ़िज़ा में) चला दिए जाएंगे।

وَاِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ﴿٤﴾ ط

4. और जब हामिला ऊंटनियां बेकार छूटी फिरेंगी (कोई उनका ख़बर गीर न होगा)।

وَاِذَا الْوُحُوْشُ حُشِرَتْ ۝٥

5. और जब वेहशी जानवर (ख़ौफ़ के मारे) जमा' कर दिए जाएंगे।

وَاِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۝٦

6. जब समन्दर और दरिया (सब) उभार दिए जाएंगे।

وَاِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ ۝٧

7. और जब रूहें (बदनों) से मिला दी जाएंगी।

وَاِذَا الْمَوْءٗدَةُ سُئِلَتْ ۝٨

8. और जब ज़िन्दा दफ़्न की हुई लड़की से पूछा जाएगा।

بِاَيِّ ذَنْۢبٍ قُتِلَتْ ۝٩

9. कि वोह किस गुनाह के बाइस क़त्ल की गई थी।

وَاِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۝١٠

10. और जब आ'माल नामे खोल दिए जाएंगे।

وَاِذَا السَّمَآءُ كُشِطَتْ ۝١١

11. और जब समावी तब्क़ात को फाड़ कर अपनी जगहों से हटा दिया जाएगा।

وَاِذَا الْجَحِيْمُ سُعِّرَتْ ۝١٢

12. और जब दोज़ख़ (की आग) भड़काई जाएगी।

وَاِذَا الْجَنَّةُ اُزْلِفَتْ ۝١٣

13. और जब जन्नत क़रीब कर दी जाएगी।

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّآ اَحْضَرَتْ ۝١٤

14. हर शख़्स जान लेगा जो कुछ उसने हाज़िर किया।

فَلَآ اُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ۝١٥

15. तो मैं क़सम खाता हूं उन (आस्मानी कुर्रों) की जो (ज़ाहिर होने के बाद) पीछे हट जाते हैं।

الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ۝١٦

16. जो बिला रोक टोक चलते रेहते हैं, (फिर ज़ाहिर हो कर) छुप जाते हैं।

وَالَّيْلِ اِذَا عَسْعَسَ ۝١٧

17. और रात की क़सम जब उसकी तारीकी जाने लगे।

وَالصُّبْحِ اِذَا تَنَفَّسَ ۝١٨

18. और सुब्ह की क़सम जब उसकी रौशनी आने लगे।

اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ۝١٩

19. बेशक येह (क़ुरआन) बड़ी इ़ज़्ज़तो बुज़ुर्गीवाले रसूल का (पढ़ा हुआ) कलाम है।

ذِىْ قُوَّةٍ عِنْدَ ذِى الْعَرْشِ مَكِيْنٍ ۝٢٠

20. जो (दा'वते हक़, तब्लीगे़ रिसालत और रूहानी इस्ते'दाद में) क़ुव्वतो-हिम्मतवाले हैं (और) मालिके अ़र्श के ह़ज़ूर बड़ी क़द्रो मंज़िलत (और जाहो अज़मत) वाले हैं।

مُّطَاعٍ ثَمَّ اَمِيْنٍ ﴿٢١﴾

21. (तमाम जानों के लिए) वाजिबुल इताअ़त हैं (क्यों कि उनकी इताअ़त ही अल्लाह की इताअ़त है,) अमानत दार हैं (वही और ज़मीनो आस्मान के सब उलूही राज़ों के ह़ामिल हैं)।

وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُوْنٍ ﴿٢٢﴾

22. और (ऐ लोगो!) येह तुम्हें अपनी सोह़बत से नवाज़नेवाले (मुह़म्मद ﷺ) दीवाने नहीं हैं (जो फ़रमाते हैं वोह ह़क़ होता है)।

وَلَقَدْ رَاٰهُ بِالْاُفُقِ الْمُبِيْنِ ﴿٢٣﴾

23. और बेशक उन्होंने उस (मालिके अ़र्श के हुस्ने मुतलक़) को (ला मकां के) रौशन किनारों पर देखा है। ★

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ﴿٢٤﴾

24. और वोह (या'नी नबिय्ये अकरम ﷺ) ग़ैब (के बताने) पर बिलकुल बख़ील नहीं है (मालिके अ़र्श ने उन के लिए कोई कमी नहीं छोड़ी है)।

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ﴿٢٥﴾

25. और वोह (क़ुरआन) हरगिज़ किसी शैतान मरदूद का कलाम नहीं है।

فَاَيْنَ تَذْهَبُوْنَ ﴿٢٦﴾

26. फिर (ऐ बद बख़्तो!) तुम (इतने बड़े ख़ज़ाने को छोड़ कर) किधर चले जा रहे हो।

اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٧﴾

27.येह (क़ुरआन) तो तमाम जहानों के लिए (सह़ीफ़ए) नसीह़त है।

لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّسْتَقِيْمَ ﴿٢٨﴾

28. तुम में से हर उस शख़्स के लिए (उस चश्मे से हिदायत मुयस्सर आ सक्ती है) जो सीधी राह चलना है।

وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٩﴾ ع ١ ٢٩ ٦

29. और तुम वोही कुछ चाह सक्ते हो जो अल्लाह चाहे जो तमाम जहानों का रब है।

★ येह तरजुमा ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास, अनस बिन मालिक, अकरमा, अबू सल्मा, ज़ह़्हाक, अबुल आ'लिया, हसन, का'बुल अह़बार, शरीक बिन अ़ब्दुल्लाह और शा'बी वग़ैरहुम के अ़क़्वाल पर किया गया है जिन्हें बुख़ारी, मुस्लिम, तिरमिज़ी, इब्ने जरीर, बग़्वी और कई अइम्मए ह़दीसने रिवायत किया है और कसीर अइम्मए तफ़्सीरने भी इसे इख़्तियार किया है।

आयातुहा 19 | 82 सूरतुल इन्फितारि मक्किय्यतुन 82 | रुकूउहा 1

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान हमेशा रहम फ़रमाने वाला है।

اِذَا السَّمَآءُ انۡفَطَرَتۡ ۙ﴿۱﴾

1. जब (सब) आस्मानी कुर्रे फट जाएंगे।

وَ اِذَا الۡكَوَاكِبُ انۡتَثَرَتۡ ۙ﴿۲﴾

2. और जब सय्यारे गिर कर बिखर जाएंगे।

وَ اِذَا الۡبِحَارُ فُجِّرَتۡ ۙ﴿۳﴾

3. और जब समंदर (और दरया) उभर कर बेह जाएंगे।

وَ اِذَا الۡقُبُوۡرُ بُعۡثِرَتۡ ۙ﴿۴﴾

4. और जब कब्रें झेरो झबर करदी जाएंगी।

عَلِمَتۡ نَفۡسٌ مَّا قَدَّمَتۡ وَاَخَّرَتۡ ؕ﴿۵﴾

5. तो हर शख्स जान लेगा के (कया) अमल उस-ने आगे भेजा और कया पीछे छोड आया था।

يٰۤاَيُّهَا الۡاِنۡسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الۡكَرِيۡمِ ۙ﴿۶﴾

6. अय इन्सान! तुझे किस चीज़ ने अपने कब्बे करीम के बारे में धोके में डाल दिया।

الَّذِىۡ خَلَقَكَ فَسَوّٰٮكَ فَعَدَلَكَ ۙ﴿۷﴾

7. जिस-ने (रहमे मादर में के अंदर एक नुत्फे में से) तुझे पैदा किया, फिर उसने तुझे (आ'ज़ा साज़ी के लिए इब्तेदाअन) दुरुस्त और सीधा किया, फिर वोह तेरी साख्त में मुनासिब तब्दीली लाया।

فِىۡۤ اَىِّ صُوۡرَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ ؕ﴿۸﴾

8. जिस सूरत में भी चाहा उसने तुझे तरकीब देदिया।

كَلَّا بَلۡ تُكَذِّبُوۡنَ بِالدِّيۡنِ ۙ﴿۹﴾

9. हकीकत तो येह है (और) तुम उस-के बर अक्स रोझे जझा को झुटलाते हो।

وَ اِنَّ عَلَيۡكُمۡ لَحٰـفِظِيۡنَ ۙ﴿۱۰﴾

10. हा़ल ांके तुम पर निगेह्बान फरिश्ते मुकर्रर हैं।

كِرَامًا كَاتِبِيۡنَ ۙ﴿۱۱﴾

11. (जो) बहुत मुअझ्झज़ हैं (तुम्हारे आ'मास नामे) लिखनेवाले हैं।

يَعۡلَمُوۡنَ مَا تَفۡعَلُوۡنَ ﴿۱۲﴾

12. वोह उन (तमाम कामों) को जान्ते हैं जो तुम करते हो।

اِنَّ الۡاَبۡرَارَ لَفِىۡ نَعِيۡمٍ ۚ﴿۱۳﴾

13. बेशक नेको कार जन्नते ने'मत में होंगे।

وَ اِنَّ الۡفُجَّارَ لَفِىۡ جَحِيۡمٍ ۚۖ﴿۱۴﴾

14. और बेशक बदकार दोझखे (सोझां) में होंगे।

يَّصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿١٥﴾
15. वोह उस-में क़ियामतके रोज़ दाखिल होंगे।

وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَآئِبِيْنَ ﴿١٦﴾
16. और वोह उस (दोझख) से (कभी भी) गाइब न हो सकेंगे।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿١٧﴾
17. और आपने कया समझा को रोझे जझा कया है ?

ثُمَّ مَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿١٨﴾
18. फिर आपने किया जाना के रोझे जझा कया है ?

يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْـًٔا ؕ وَالْاَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ﴿١٩﴾
19. (येह) वोह दिन है जब कोई शख्स किसी के लिएकिसी चीज़ का मालिक न होगा,और हुक्म फ़रमाई उस दिन अल्लाह ही की होगी।

आयातुहा 36	83 सूरतुल मुतफ़्फ़िफ़ी-न मक्किय्यतुन 86	रुकूउहा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत हरबान हमेशा रहम फ़रमाने वाला है।

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ﴿١﴾
1. बरबादी है नाप तोल में कमी करनेवालों के लिए।

الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ ﴿٢﴾
2. येह लोग जब (दूसरे) लोगों से नाप लेते हैं तो (उनसे) पूरा लेते हैं।

وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ﴿٣﴾
3. और जब उन्हें (ख़ुद) नाप कर या तोल कर देते हैं तो घटा कर देते हैं।

اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ ﴿٤﴾
4. क्या येह लोग इस बात का यक़ीन नहीं रखते कि वोह (मरने के बा'द दोबारा) उठाए जाएंगे?

لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٥﴾
5. एक बड़े सख़्त दिन के लिए।

يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦﴾
6. जिस दिन सब लोग तमाम जहानों के रब के हुज़ूर खड़े होंगे।

كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ ﴿٧﴾
7. येह हक़ है कि बदकारों का नामए आ'माल सिज्जीन (या'नी दीवान ख़ानए जहन्नम) में है।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سِجِّيْنٌ ﴿٨﴾

8. और आपने क्या जाना कि सिज्जीन कया है?

كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ﴿٩﴾

9. (येह क़ैद ख़ानए दोज़ख़ में उस बड़े दीवान के अंदर) लिखी हुई (एक) किताब है (जिसमें जहन्नमी का नाम और उसके आ'माल दर्ज हैं)।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٠﴾

10. उस दिन झुटलाने वालों के लिए तबाही होगी।

الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿١١﴾

11. जो लोग रोज़े जज़ा को झुटलाते हैं।

وَمَا يُكَذِّبُ بِهٖٓ اِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ﴿١٢﴾

12. और उसे कोई नहीं झुटलाता सिवाए हर उस शख़्स के जो सरकशो गुनहगार है।

اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣﴾

13. जब उस पर हमारी आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो केहता (या समझता) है कि (येह तो) अगले लोगों की कहानियां हैं।

كَلَّا بَلْ ۜ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٤﴾

14. (ऐसा) हरगिज़ नहीं बल्कि (हक़ीक़त येह है कि) उनके दिलों पर इन आ'माले (बद) का जंग चढ़ गया है जो वोह कमाया करते थे, (इस लिए आयतें उनके दिल पर असर नहीं करतीं)।

كَلَّآ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ ﴿١٥﴾

15. हक़ येह है कि बेशक उस दिन उन्हें अपने रब के दीदार से (महरूम करने के लिए) पसे परदा कर दिया जाएगा।

ثُمَّ اِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيْمِ ﴿١٦﴾

16. फिर वोह दोज़ख़ में झोंक दिए जाएंगे।

ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٧﴾

17. फिर उनसे कहा जाएगा : येह वोह (अ़ज़ाबे जहन्नम) है जिसे तुम झुटलाया करते थे।

كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ ﴿١٨﴾

18. येह (भी) हक़ है कि बेशक नेकूकारों का नविश्तए आ'माल इ़ल्लिय्यीन (या'नी दीवान ख़ानए जन्नतमें है)।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ﴿١٩﴾

19. और आपने क्या जाना कि इ़ल्लिय्यीन कया है?

كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ﴿٢٠﴾

20. (येह जन्नत के आ'ला दर्जे में उस बड़े दीवान के अंदर) लिखी हुई (एक) किताब है (जिसमें उन जन्नतियों के नाम और आ'माल दर्ज हैं, जिन्हें आ'ला मुक़ामात दिए जाएंगे)।

يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢١﴾

21. उस जगह (अल्लाह) के मुक़र्रब फ़रिश्त हाज़िर होते हैं।

اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ﴿٢٢﴾

22. बेशक नेकूकार (राहतो मसर्रत से) ने'मतोंवाली जन्नत में होगें।

عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ﴿٢٣﴾

23. तख़्तों पर बैठे नज़्ज़ारे कर रहे होंगे।

تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيْمِ ﴿٢٤﴾

24. आप उनके चेहरों से ही ने'मतो राहत की रौनक़ और शगुफ़्तगी मा'लूम कर लेंगे।

يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ﴿٢٥﴾

25. उन्हें सर ब-मोहर बड़ी लज़ीज़ शराबे तहूर पिलाई जाएगी।

خِتٰمُهٗ مِسْكٌ ؕ وَ فِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ ﴿٢٦﴾

26. उसकी मोहर कस्तूरी की होगी,और (येही वोह शराब है) जिसके हुसूल में शाइक़ीन को जल्द कोशिश करके सब्क़त लेनी चाहिए, (कोई शराबे ने'मत का तालिबो शाइक़ है, कोई शराबे क़ुर्बत का और कोई शराबे दीदार का, हर किसी को उसके शौक़ के मुताबिक़ पिलाई जाएगी)।

وَ مِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ﴿٢٧﴾

27. और उस (शराब) में आबे तस्नीम की आमेज़िश होगी।

عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢٨﴾

28.(येह तस्नीम) एक चश्मा है जहां से सिर्फ़ अहले क़ुर्बत पीते हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ ﴿٢٩﴾

29. बेशक मुजरिम लोग ईमानवालों का (दुनिया में) मज़ाक़ उड़ाया करते थे।

وَ اِذَا مَرُّوْا بِهِمْ يَتَغَامَزُوْنَ ﴿٣٠﴾

30. और जब उनके पास से गुज़रते तो आपस में आंखों से इशारा बाज़ी करते थे।

وَ اِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمُ

31. और जब अपने घरवालों की तरफ़ लौटते तो

انْقَلَبُوْا فَكِهِيْنَ ﴿٣١﴾

(मोमिनों की तगंदस्ती और अपनी खुशहाली का मुवाज़ना कर के) इतराते और दिल लगी करते हुए पलटते थे।

وَ اِذَا رَاَوْهُمْ قَالُوْۤا اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ لَضَآلُّوْنَ ﴿٣٢﴾

32. और जब येह (मग़रूर लोग) उन (कमज़ोर हाल मोमिनों) को देखते तो केहते : यक़ीनन येह लोग राह से भटक गए हैं (या'नी येह दुनिया गंवां बैठे हैं और आख़िरत तो है ही फ़क़त अफ़्साना)।

وَ مَاۤ اُرْسِلُوْا عَلَيْهِمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٣٣﴾

33. हालांकि वोह (उनके हाल) पर निगेहबान बना कर नहीं भेजे गए थे।

فَالْيَوْمَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ ﴿٣٤﴾

34. पस आज (देखो) अह्ले ईमान काफ़िरों पर हंस रहे हैं।

عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ﴿٣٥﴾

35. सजे हुए तख़्तों पर बैठे (अपनी खुश हाली और काफ़िरों की बदहाली) का नज़्ज़ारा कर रहे हैं।

هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾ ع ١ ٣٦ ٨

36. सो क्या काफ़िरों को उस (मज़ाक़) का बदला दे दिया गया जो वोह (मुसल्मानों से) किया करते थे ?

आयातुहा 25 | 84 सूरतुल इन्शिक़ाक़ि मक्कियतुन 83 | रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमाने वाला है।

اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ﴿١﴾

1. जब (सब) आस्मानी कुर्रे फट जाएंगे।

وَ اَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَ حُقَّتْ ﴿٢﴾

2. और अपने रब का हुक्मे (इन्शिक़ाक़) बजा लाएगें, और (येही ता'मीले अम्र) उसके लाइक़ है।

وَ اِذَا الْاَرْضُ مُدَّتْ ﴿٣﴾

3. और जब ज़मीन (रेज़ा रेज़ा कर के) फैला दी जाएगी।

وَ اَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَ تَخَلَّتْ ﴿٤﴾

4. और जो कुछ उसके अंदर है उसे निकाल बाहर फैंकेगी और ख़ाली हो जाएगी।

وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝٥

5. और (वोह भी) अपने रब का हुक्मे (इन्शिक़ाक़) बजा लाएगी, और (येही इताअ़त) उसके लाइक़ है।

يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى
رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ۝٦

6. ऐ इन्सान ! तू अपने रब तक पहुंचने में सख़्त मशक़्क़तें बर्दाश्त करता है बिल आख़िर तुझे उसी से जा मिलना है।

فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۝٧

7. पस जिस शख़्स का नामए आ'माल उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा।

فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيْرًا ۝٨

8.तो अ़नक़रीब उससे आसान सा हिसाब लिया जाएगा।

وَّيَنْقَلِبُ اِلٰۤى اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ۝٩

9. और वोह अपने अेहले ख़ाना की तरफ़ मसरूरो शादां पलटेगा।

وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ وَرَآءَ
ظَهْرِهٖ ۝١٠

10. और अलबत्ता वोह शख़्स जिसका नामए आ'माल पीठ के पीछे से दिया जाएगा।

فَسَوْفَ يَدْعُوْا ثُبُوْرًا ۝١١

11. तो वोह अ़नक़रीब मौत को पुकारेगा।

وَّيَصْلٰى سَعِيْرًا ۝١٢

12. और वोह दोज़ख़ की भड़कती हुई आग में दाख़िल होगा।

اِنَّهٗ كَانَ فِيْۤ اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ۝١٣

13. बेशक वोह (दुनिया में) अह्ले ख़ाना में खुशो ख़ुर्रम रेहता था।

اِنَّهٗ ظَنَّ اَنْ لَّنْ يَّحُوْرَ ۝١٤

14. बेशक उसने येह गुमान कर लिया था कि वोह हिसाब के लिए (अल्लाह के पास) हरगिज़ लौट कर न जाएगा।

بَلٰۤى ۛ اِنَّ رَبَّهٗ كَانَ بِهٖ بَصِيْرًا ۝١٥ معانقة

15. क्यों नहीं ! बेशक उसका रब उसको ख़ूब देखने वाला है।

فَلَاۤ اُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ۝١٦

16. सो मुझे क़सम है शफ़क़ (या'नी शाम की सुर्ख़ी या उसके बाद के उजाले)की।

وَالَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ۝١٧

17. और रातकी और उन चीज़ों की जिन्हें वोह (अपने दामन में) समेट लेती है।

وَالْقَمَرِ اِذَا اتَّسَقَ ۝١٨

18. और चांद की जब वोह पूरा दिखाई देता है।

لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ۝١٩

19. तुम यक़ीनन तबक़ दर तबक़ ज़रूर सवारी करते हुए जाओगे।

فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٠﴾

20. तो उन्हें क्या हो गया है कि (क़ुरआनी पेशीन गोई की सदाक़त देख कर भी) ईमान नहीं लाते?

وَاِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْاٰنُ لَا يَسْجُدُوْنَ ﴿٢١﴾ السجدة ١٣

21. और जब उन पर क़ुरआन पढ़ा जाता है तो (अल्लाह के हुज़ूर) सजदह रेज़ नहीं होते।

بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٢﴾

22. बल्के काफ़िर लोग (उसे मज़ीद) झुटला रहे हैं।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُوْعُوْنَ ﴿٢٣﴾

23. और अल्लाह (कुफ़्रो अ़दावत के उस सामान को) खूब जानता है जो वोह जमा' कर रहे हैं।

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٤﴾

24. सो आप उन्हें दर्दनाक अज़ाब की बिशारत दे दें।

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ﴿٢٥﴾ ع ١ ١٥ ٩

25. मगर जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते हैं उनके लिए गैर मुन्क़ता' (दाइमी) सवाब है।

आयातुहा 22 | 85 सूरतुल बुरूजि मक्किय्यतुन 27 | रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ﴿١﴾

1. बुर्जों (या'नी कह्कशाओं)वाले आस्मान की क़सम।

وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ﴿٢﴾

2. और उस दिन की क़सम जिसका वा'दा किया गया है।

وَشَاهِدٍ وَّمَشْهُوْدٍ ﴿٣﴾

3. जो (उस दिन) हाज़िर होगा उसकी क़सम, और जो कुछ हाज़िर किया जाएगा उस की क़सम।

قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ﴿٤﴾

4. खंदक़ोंवाले (लोग) हलाक कर दिए गए।

النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ ﴿٥﴾

5. (या'नी) उस भड़कती आग (वाले) जो बड़े ईंधन से (जलाई गई) थी।

اِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ ﴿٦﴾

6. जब वोह उसके किनारों पर बैठे थे।

وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ

7. और वोह खुद गवाह है जो कुछ वोह अहले ईमान के

شُهُوْدٌ ۝٧

साथ कर रहे थे, (या'नी उन्हें आग में फेंक फेंक कर जला रहे थे)

وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّآ اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۝٨

8. और उन्हें उन (मोमिनों) की तरफ़ से और कुछ (भी) ना गवार न था सिवाए इसके कि वोह अल्लाह पर ईमान ले आए थे, जो ग़ालिब (और) लाइक़े ह़म्दो सना है।

الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝٩

9. जिसके लिए आस्मानों और ज़मीन की (सारी) बादशाहत है और अल्लाह हर चीज़ पर गवाह है।

اِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ وَ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَ لَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيْقِ ۝١٠

10. बेशक जिन लोगों ने मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों को अज़िय्यत दी फिर तौबा (भी) न की तो उनके लिए अ़ज़ाबे जहन्नम है, और उनके लिए (बिल ख़ुसूस) आग में जलने का अ़ज़ाब है।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيْرُ ۝١١

11. बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे उनके लिए जन्नतें हैं, जिनके नीचे से नेहरें जारी हैं, येही बड़ी कामयाबी है।

آية حصية ١٢

اِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ ۝١٢

12. बेशक आपके रब की पकड़ बहुत सख़्त है।

اِنَّهٗ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيْدُ ۝١٣

13. बेशक वोही पहली बार पैदा फ़रमाता है, और वोही दोबारा पैदा फ़रमाएगा।

وَهُوَ الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ ۝١٤

14. और बड़ा बख़्शनेवाला बहुत मुह़ब्बत फ़रमाने वाला है।

ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيْدُ ۝١٥

15.मालिके अ़र्श (या'नी पूरी काइनात के तख़्ते इक़्तिदार का मालिक) बड़ी शान वाला है।

فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ۝١٦

16. वोह जो भी इरादा फ़रमाता है (उसे) ख़ूब कर देनेवाला है।

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْجُنُوْدِ ﴿١٧﴾ 17. कया आपके पास लश्करों की ख़बर पहोंची है ?

فِرْعَوْنَ وَثَمُوْدَ ﴿١٨﴾ 18. फ़िरऔन और समूद (के लश्करों) की।

بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ تَكْذِيْبٍ ﴿١٩﴾ 19. बल्कि ऐसे काफ़िर (हमेशा ह़क़ को) झुटलाने में (ही कोशां रेहते) हैं।

وَّاللّٰهُ مِنْ وَّرَآئِهِمْ مُّحِيْطٌ ﴿٢٠﴾ 20. और अल्लाह उनके गिर्दो पेश से (उन्हें) घेरे हुए है।

بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ﴿٢١﴾ 21. बल्कि येह बड़ी अ़ज़मतवाला क़ुरआन है।

فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ﴿٢٢﴾ 22. (जो) लौहे़ मह़फ़ूज़ में (लिखा हुआ) है।

ع ١ / ٢٢

आयातुहा 17 | 86 सूरतुत तारिकि मक्किय्यतुन 36 | रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ﴿١﴾ 1. आस्मान (की फ़िज़ाए बसीत और ख़लाए अज़ीम) की क़सम और रात को (नज़र) आनेवाले की क़सम।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ﴿٢﴾ 2. और आपको क्या मा'लूम कि रात को (नज़र) आने वाला क्या है ?

النَّجْمُ الثَّاقِبُ ﴿٣﴾ 3. (इससे मुराद) हर वोह आस्मानी कुर्रा है (ख़्वाह वोह सितारा हो या सय्यारा या अज्रामे समावी का कोई और कुर्रा) जो चमक कर (फिज़ा को) रौशन कर देता है.★

اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ﴿٤﴾ 4. कोई शख़्स ऐसा नहीं जिस पर एक निगेहबान (मुक़र्रर) नहीं है।

فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ﴿٥﴾ 5. पस इन्सान को ग़ैर (व तह़क़ीक़) करना चाहिए कि वोह किस चीज़ से पैदा किया गया है।

★ (अन्नज्मुस्साक़िब से मुराद ज़ाते मुहम्मद ﷺ भी है, जिसने सिराजम मुनीरकी शानके सात आस्माने रिसालत पर चमक कर ज़ुल्मत भरी काइनात को नूरे ईमान से मुनव्वर कर दिया है।)(अश शिफ़ा)

خُلِقَ مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ۙ ﴿٦﴾

6. वोह क़ुव्वत उछलने वालेपानी (या'नी क़वी मु-त-ह़र्रिक माद्दए तौलीद) में से पैदा किया गया है।

يَّخْرُجُ مِنْۢ بَيْنِ الصُّلْبِ وَ
التَّرَآئِبِ ؕ ﴿٧﴾

7. जो पीठ और कूल्हे की हड्डियों के दरमियान (पेडू के ह़ल्क़े में) से गुज़र कर बाहर निकलता है।

اِنَّهٗ عَلٰى رَجْعِهٖ لَقَادِرٌ ؕ ﴿٨﴾

8. बेशक वोह उस (ज़िन्दगी) को फिर वापस लाने पर भी क़ादिर है।

يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ ۙ ﴿٩﴾

9. जिस दिन सब राज़ ज़ाहिर कर दिए जाएंगे।

فَمَا لَهٗ مِنْ قُوَّةٍ وَّ لَا نَاصِرٍ ؕ ﴿١٠﴾

10. फिर इन्सान के पास न (ख़ुद) कोई क़ुव्वत होगी न कोई (उसका) मददगार होगा।

وَ السَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ۙ ﴿١١﴾

11. उस आस्मानी काइनात की क़सम जो फिर इब्तिदाई ह़ालत में पलट जानेरवाली है।

وَ الْاَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ۙ ﴿١٢﴾

12. उस ज़मीन की क़सम जो फट कर (रेज़ा रेज़ा) हो जानेवाली है।

اِنَّهٗ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ۙ ﴿١٣﴾

13. बेशक येह फ़ैसला कुन (क़त़ई) फ़रमान है।

وَّ مَا هُوَ بِالْهَزْلِ ؕ ﴿١٤﴾

14. और येह हंसी की बात नहीं है।

اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا ۙ ﴿١٥﴾

15.बेशक वोह (काफ़िर) पुर फ़रैब तदबीरों में लगे हुए हैं।

وَّ اَكِيْدُ كَيْدًا ۚ ۖ ﴿١٦﴾

16. और मैं अपनी तदबीर फ़रमा रहा हूं।

فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ع ﴿١٧﴾

17. पस आप काफ़िरों को (ज़रा) मोहलत दीजिए, ज़ियादा नहीं बस) उन्हें थोड़ी सी ढील (और) दे दीजिए।

आयातुहा 19 | 87 सूरतुल आ'ला मक्कियतुन 8 | रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ۙ ﴿١﴾

1. अपने रब के नाम की तस्बीह़ करें जो सबसे बुलंद है।

الَّذِي خَلَقَ فَسَوَّىٰ ﴿٢﴾

2. जिसने (काइनात की हर चीज़ को) पैदा किया फिर उसे (जुम्ला तक़ाज़ों की तक्मील के) साथ दुरुस्त तवाज़ुन दिया।

وَالَّذِي قَدَّرَ فَهَدَىٰ ﴿٣﴾

3. और जिसने (हर हर चीज़ के लिए) क़ानून मुक़र्रर किया फिर (उसे अपने अपने निज़ाम के मुताबिक़ रेहने और चलने का) रास्ता बताया।

وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعَىٰ ﴿٤﴾

4. और जिसने (ज़मीन से) चारा निकाला।

فَجَعَلَهُ غُثَاءً أَحْوَىٰ ﴿٥﴾

5. फिर उसे सियाही माइल खुश्क कर दिया।

سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنسَىٰ ﴿٦﴾

6. (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) हम आपको खुद (ऐसा) पढ़ाएंगे कि आप (कभी) नहीं भूलेंगे।

إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفَىٰ ﴿٧﴾

7. मगर जो अल्लाह चाहे, बेशक वोह जहर और ख़फ़ी (या'नी ज़ाहिरो पोशीदा और बुलन्दो आहिस्ता) सब बातों को जानता है।

وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرَىٰ ﴿٨﴾

8. और हम आप को उस आसान (शरीअ़त पर अ़मल पैरा होने) के लिए (भी) सहूलत फ़राहम फ़रमाएंगे।

فَذَكِّرْ إِن نَّفَعَتِ الذِّكْرَىٰ ﴿٩﴾

9. पस नसीह़त फ़रमाते रहिय्ये, ब-शर्ते कि नसीह़त (सुननेवालों को) फाइदा दे।

سَيَذَّكَّرُ مَن يَخْشَىٰ ﴿١٠﴾

10. अलबत्ता वोही (नसीह़त) क़ुबूल करेगा जो अल्लाह से डरता होगा।

وَيَتَجَنَّبُهَا الْأَشْقَى ﴿١١﴾

11. और बद बख़्त उस नसीह़त से पहलू तही करेगा।

الَّذِي يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرَىٰ ﴿١٢﴾

12. जो (क़ियामत के दिन) सबसे बड़ी आग में दाख़िल होगा।

ثُمَّ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ﴿١٣﴾

13. फिर वोह उसमें न मरेगा और न जिएगा।

قَدْ أَفْلَحَ مَن تَزَكَّىٰ ﴿١٤﴾

14. बेशक वोही बा मुराद हुआ जो (नफ़्स की आफ़तों और गुनाह की आलूदगियों से) पाक हो गया।

وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلَّىٰ ﴿١٥﴾

15. और वोह अपने रब के नाम का ज़िक्र करता रहा, और (कसरतो पाबंदी से) नमाज़ पढता रहा।

بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿١٦﴾

16. बल्कि तुम (अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ करने की बजाए) दुनियावी ज़िन्दगी (की लिज़्ज़तों) को इख़्तियार करते हो।

وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ﴿١٧﴾

17. ह़ालांकि आख़िरत की (लिज़्ज़तो राह़त) बेहतर और हमेशा बाक़ी रेहने वाली है।

اِنَّ هٰذَا لَفِي الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ﴿١٨﴾

18. बेशक येह (ता'लीम) अगले सह़ीफ़ों में भी (मज़कूर) है।

صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ﴿١٩﴾ ع ١ ١٩ ١٢

19. (जो) इब्राहीम और मूसा (عليهما السلام) के सह़ाइफ़ हैं।

आयातुहा 26 | 88 सूरतुल ग़ाशि-यति मक्कियतुन 68 | रुकूउहा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ﴿١﴾

1. कया आपको (हर चीज़ पर) छा जाने वाली क़ियामत की ख़बर पहुंची है।

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ﴿٢﴾

2. उस दिन कितने ही चेहरे ज़लीलो ख़्वार होंगे।

عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ﴿٣﴾

3. (अल्लाह को भूल कर दुनियावी) मेहनत करनेवाले (चंद रोजह ऐशो आराम की ख़ातिर सख़्त) मशक़्क़तें झेलने वाले।

تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ﴿٤﴾

4. दहक्ती हुई आग में जा गिरेंगे।

تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ﴿٥﴾

5. (उन्हें) खौलते हुवे चश्मे से (पानी) पिलाया जाएगा।

لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ﴿٦﴾

6. उनके लिए ख़ारदार ख़ुश्क ज़ेहरीली झाड़ियों के सिवा कुछ खाना न होगा।

لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِيْ مِنْ جُوْعٍ ﴿٧﴾

7. (येह खाना) न फ़रबा करेगा न भूक ही दूर करेगा।

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ﴿٨﴾

8. (इसके बर अ़क्स) उस दिन बहुत से चेहरे (ह़सीन) बा रौनक़ और तरो ताज़ह होंगे।

لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ﴿٩﴾

9. अपनी (नेक) काविशों के बाइस ख़ुशो ख़ुर्रम होंगे.

فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ﴿١٠﴾

10. आ़लीशान जन्नत में (क़ियाम पज़ीर) होंगे।

لَّا تَسۡمَعُ فِيۡهَا لَاغِيَةً ؕ ١١

11. उसमें कोई लग़्व बात न सुनेंगे (जैसे अहले बातिल उनसे दुनिया में किया करते थे।)

فِيۡهَا عَيۡنٌ جَارِيَةٌ ١٢

12. उसमें बेह्ते हुवे चश्में होंगे।

وقف لازم

فِيۡهَا سُرُرٌ مَّرۡفُوۡعَةٌ ۙ ١٣

13. उसमें ऊंचे (बिछे हुए) तख़्त होंगे।

وَّ اَكۡوَابٌ مَّوۡضُوۡعَةٌ ۙ ١٤

14. और जाम (बड़े करीने से) रख्खे हुए होंगे।

وَّ نَمَارِقُ مَصۡفُوۡفَةٌ ۙ ١٥

15. और ग़ालीचे गाव तकिये क़तार दर क़तार लगे होंगे।

وَّ زَرَابِيُّ مَبۡثُوۡثَةٌ ؕ ١٦

16. और नर्मो नफ़ीस क़ालीन मस्नदें बिछी होंगी।

اَفَلَا يَنۡظُرُوۡنَ اِلَى الۡاِبِلِ كَيۡفَ خُلِقَتۡ وقفة ١٧

17. (मुन्किरीन तअ़ज्जुब करते हैं कि जन्नत में येह सब कुछ कैसे बन जाएगा तो) क्या येह लोग ऊंट की तरफ़ नहीं देखते के वोह किस तरह (अ़जीब साख़्त पर) बनाया गया है ?

وَ اِلَى السَّمَآءِ كَيۡفَ رُفِعَتۡ وقفة ١٨

18. और आस्मान की तरफ़ (निगाह नहीं करते) कि वोह कैसे (अ़ज़ीम वुस्अ़तों के साथ) उठाया गया है?

وَ اِلَى الۡجِبَالِ كَيۡفَ نُصِبَتۡ وقفة ١٩

19. और पहाड़ों को (नहीं देखते) कि वोह किस तरह ज़मीन से उभार कर खड़े किए गए हैं?

وَ اِلَى الۡاَرۡضِ كَيۡفَ سُطِحَتۡ وقفة ٢٠

20. और ज़मीन को नहीं देखते कि वेह किस तरह (गोलाई के बा वजूद) बिछाई गई है ?

فَذَكِّرۡ ؕ اِنَّمَاۤ اَنۡتَ مُذَكِّرٌ ؕ ٢١

21. पस आप नसीहत फ़रमाते रहिए, आप तो नसीहत ही फ़रमानेवाले हैं।

لَسۡتَ عَلَيۡهِمۡ بِمُصَيۡطِرٍ ۙ ٢٢

22. आप उन पर जाबिरो क़ाहिर (के तौर पर) मुसल्लत नहीं हैं।

اِلَّا مَنۡ تَوَلّٰى وَ كَفَرَ ۙ ٢٣

23. मगर जो रू गर्दानी करे और कुफ़्र करे।

فَيُعَذِّبُهُ اللّٰهُ الۡعَذَابَ الۡاَكۡبَرَ ؕ ٢٤

24. तो उसे अल्लाह सबसे बड़ा अ़ज़ाब देगा।

اِنَّ اِلَيۡنَاۤ اِيَابَهُمۡ ۙ ٢٥

25. (बेशक बिल आख़िर हमारी ही तरफ उनका पलटना है।

ثُمَّ اِنَّ عَلَيۡنَا حِسَابَهُمۡ ع ٢٦

26. फिर यक़ीनन हमारे ही ज़िम्मे उन का हिसाब (लेना) है।

النصف ع ٢٦ ١٣

आयातुहा 30 | 89 सूरतुल फ़ज्रि मक्किय्यतुन 10 | रुकूउहा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

وَالْفَجْرِ ۙ ﴿١﴾

1. उस सुब्ह़ की क़सम (जिससे ज़ुल्मते शब छट गई।[1]

وَلَيَالٍ عَشْرٍ ۙ ﴿٢﴾

2. और दस (मुबारक) रातों की क़सम।[2]

وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ۙ ﴿٣﴾

3. और जुफ़्त की क़सम और ताक़ की क़सम।[3]

وَالَّيْلِ اِذَا يَسْرِ ۚ ﴿٤﴾

4. और रात की क़सम जब गुज़र चले,(मुराद हर शब है या बतौरे ख़ास शबे मुज़्दलिफ़ा या शबे क़द्र।)

هَلْ فِيْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ ؕ ﴿٥﴾

5. बेशक उनमें अ़क्ल मन्द के लिए बड़ी क़सम है।

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۙ ﴿٦﴾

6. क्या आपने नहीं देखा कि आपके रबने (क़ौमे) आद के साथ कैसा (सुलूक) किया।

اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۙ ﴿٧﴾

7. (जो अहले) इरम थे (और) बड़े बड़े सुतूनों (की तरह़ दराज़ क़द और ऊंचे मह़ल्लात)वाले थे।

الَّتِيْ لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ۙ ﴿٨﴾

8. जिनका मिस्ल (दुनिया के) मुल्कों में (कोई भी) पैदा नहीं किया गया।

---

1. (मुराद हर रोज़ की सुब्ह़ या नमाज़े फ़ज्र है या बतौरे ख़ास माहे ज़िल ह़िज्जा की पहली सुब्ह़ या यकुम मुह़र्रम की सुब्ह़ है या ईदुज़्ज़ुहा की सुब्ह़, इससे मुराद सय्यिदुना मुह़म्मद मुस्तफ़ा ﷺ की ज़ाते गिरामी भी है जिनकी बे'सत से शबे ज़ुलमत का ख़ातिमा हुआ और सुब्ह़े ईमानी फूटी)।

2. (मुराद माहे रमज़ान के आख़िरी अ़श्रे की रातें या पहले अ़श्रए मुह़र्रम की रातें हैं या अव्वल अ़श्रए ज़िल ह़िज्जा की रातें हैं जो बरकात व दरजात से मा'मूर हैं)।

.3. जुफ़्त (जोड़ा) से मुराद कुल मख़्लूक़ है जो जोड़ों की सूरत में पैदा की गई है, और ताक़ (फ़र्दो तन्हा) से मुराद ख़ालिक है जो वह़दहू ला शरीक है, या शफ़्ए यौमे नह़र (क़ुरबानी) और वत्रे यौमे अ़रफ़ा (ह़ज्ज) है, या शफ़्अ़ से मुराद दुनिया के शबो रोज़ हैं,और वत्र से मुराद यौमे क़ियामत है जिसकी कोई शब न होगी, या शफ़्अ़ से मुराद साल भर की आ़म जुफ़्त रातें मुराद हैं, और वत्र से मुराद साल भर की बरकतवाली रातें हैं, म-स-लन : शबे मे'राज, शबे बराअत और शबे क़द्र वग़ैरह जो पै दर पै रज्जब, शा'बान और रमज़ान में आती हैं, या शफ़्अ़ से मुराद ह़ज़रते आदम عليه السلام और ह़ज़रते ह़व्वा عليها السلام का पहला जोड़ा है, और वत्रसे मुराद तन्हा ह़ज़रते आदम عليه السلام जिनसे तख़्लीक़े इन्सानिय्यत की इब्तेदा हुई)।

وَ ثَمُوْدَ الَّذِيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۝٩

9. और समूद (के साथ क्या सुलूक हुआ) जिन्होंने वादिये (क़ुरा) में चट्टानों को काट (कर पथ्थरों से सेंकड़ों शहरों को ता'मीर कर) डाला था।

وَ فِرْعَوْنَ ذِى الْاَوْتَادِ ۝١٠

10. और फ़िरऔन का (क्या हश्र हुवा) जो बड़े लश्करों वाला (या लोगों को मेख़ों से सज़ा देने वाला) था।

الَّذِيْنَ طَغَوْا فِى الْبِلَادِ ۝١١

11. (येह) वोह लोग (थे) जिन्होंने (अपने-अपने) मुल्कों में सरकशी की थी।

فَاَكْثَرُوْا فِيْهَا الْفَسَادَ ۝١٢

12. फिर उनमें बड़ी फ़साद अंगेज़ी की थी।

فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ۝١٣

13. तो आपके रबने उन पर अ़ज़ाब का कोड़ा बरसाया।

اِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ۝١٤

14. बेशक आप का रब (सरकशों और ना फ़रमानों की) ख़ूब ताक में है।

فَاَمَّا الْاِنْسَانُ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ رَبُّهٗ فَاَكْرَمَهٗ وَ نَعَّمَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّىْٓ اَكْرَمَنِ ۝١٥

15. मगर इन्सान (ऐसा है) कि जब उसका रब उसे राह़तो आसाइश दे कर) आज़माता है और उसे इ़ज़्ज़त से नवाज़ता है और उसे ने'मतें बख़्शता है तो वोह केहता है : मेरे रबने मुझ पर करम फ़रमाया।

وَ اَمَّآ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّىْٓ اَهَانَنِ ۝١٦

16. लेकिन जब वोह उसे (तक्लीफ़ो मुसीबत दे कर) आज़माता है और उस पर उसका रिज़्क़ तंग करता है तो वोह केहता है : मेरे रबने मुझे ज़लील कर दिया।

كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ۝١٧

17. येह बात नहीं बल्कि (ह़क़ीक़त येह है कि इ़ज़्ज़तो मालो दौलत के मिलने पर) तुम यतीमों की क़द्रो इकराम नहीं करते।

وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝١٨

18. और न ही तुम मिस्कीनों (या'नी ग़रीबों और मोह्ताजों) को खाना खिलाने की (मुआ़शरे में) एक दूसरे को तरग़ीब देते हो।

وَ تَاْكُلُوْنَ التُّرَاثَ اَكْلًا لَّمًّا ۝١٩

19. और विरासत का सारा माल समेट कर (ख़ुद ही) खा जाते हो (उसमें से इफ़्लास ज़दह लोगों का ह़क़ नहीं निकालते।)

وَّ تُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ؕ ﴿۲۰﴾

20. और तुम मालो दौलत से ह़द दर्जा मुह़ब्बत रखते हो।

كَلَّاۤ اِذَا دُكَّتِ الْاَرْضُ دَكًّا دَكًّا ۙ ﴿۲۱﴾

21. यक़ीनन जब ज़मीन पाश पाश कर के रेज़ह रेज़ह कर दी जाएगी।

وَّ جَآءَ رَبُّكَ وَ الْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۚ ﴿۲۲﴾

22. और आपका रब जल्वह फ़रमा होगा, और फ़रिश्ते क़तार दर क़तार (उसके ह़ुज़ूर) ह़ाज़िर होंगे।

وَ جِایْٓءَ یَوْمَىٕذٍۭ بِجَهَنَّمَ ۬ۙ یَوْمَىٕذٍ یَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَ اَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى ؕ ﴿۲۳﴾

23. और उस दिन दोज़ख़ पेश की जाएगी, उस दिन इन्सान को समझ आ जाएगी मगर (अब) उसे नसीह़त कहां (फ़ाइदह मन्द) होगी।

یَقُوْلُ یٰلَیْتَنِیْ قَدَّمْتُ لِحَیَاتِیْ ۚ ﴿۲۴﴾

24. वोह कहेगा : अय काश ! मैं ने (इस अस्ल) ज़िन्दगी के लिए (कुछ) आगे भेज दिया होता (जो आज मेरे काम आता)।

فَیَوْمَىٕذٍ لَّا یُعَذِّبُ عَذَابَهٗۤ اَحَدٌ ۙ ﴿۲۵﴾

25. सो उस दिन न उसके अ़ज़ाब की तरह़ कोई अ़ज़ाब दे सकेगा।

وَّ لَا یُوْثِقُ وَ ثَاقَهٗۤ اَحَدٌ ؕ ﴿۲۶﴾

26. और न उसके जकड़ने की तरह़ कोई जकड़ सकेगा।

یٰۤاَیَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَىٕنَّةُ ۗۖ ﴿۲۷﴾

27. ऐ इत्मीनान पा जानेवाले नफ़्स !

ارْجِعِیْۤ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِیَةً مَّرْضِیَّةً ۚ ﴿۲۸﴾

28. तू अपने रब की तरफ़ इस ह़ालमें लौट आ कि तू उसकी रज़ा का तालिब भी हो और उसकी रज़ा का मतलूब भी, (गोया उसकी रज़ा तेरी मतलूब हो और तेरी रज़ा उसकी मतलूब)।

فَادْخُلِیْ فِیْ عِبٰدِیْ ۙ ﴿۲۹﴾

29. पस तू मेरे (कामिल) बंदों में शामिल हो जा।

وَ ادْخُلِیْ جَنَّتِیْ ۠ ﴿۳۰﴾

30. और मेरी जन्नते (क़ुर्बते दीदार) में दाख़िल हो जा।

आयातुहा 20 | 90 सूरतुल ब-लदि मक्कियतुन 35 | रुकूउहा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۙ﴿۱﴾

1. मैं उस शहरे (मक्का) की क़सम खाता हूं।

وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۙ﴿۲﴾

2. (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) इस लिए कि आप इस शहर में तशरीफ़ फ़रमा हैं।[1]

وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ۙ﴿۳﴾

3. (ऐ ह़बीबे मुकर्रम ! आपके : वालिद (आदम या इब्राहीम عليهما السلام) की क़सम (और उनकी) क़सम जिनकी विलादत हुई।[2]

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ ؕ﴿۴﴾

4. बेशक हमने इन्सानको मशक़्क़त में (मुब्तिला रेहने वाला) पैदा किया है।

اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ عَلَيْهِ اَحَدٌ ۘ﴿۵﴾

5. क्या वोह येह गुमान करता है कि उस पर हरगिज़ कोई भी क़ाबू न पा सकेगा।

وقف لازم

يَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ؕ﴿۶﴾

6. वोह (बड़े फ़ख़्र से) केहता है कि मैंने ढेरों माल ख़र्च किया है।

اَيَحْسَبُ اَنْ لَّمْ يَرَهٗٓ اَحَدٌ ؕ﴿۷﴾

7. क्या वोह येह ख़याल करता है कि उसे (येह फ़ुज़ूल ख़र्चियां करते हुए) किसी ने नहीं देखा।

اَلَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ عَيْنَيْنِ ۙ﴿۸﴾

8. क्या हमने उसके लिए दो आंखें नहीं बनाईं?

وَلِسَانًا وَّشَفَتَيْنِ ۙ﴿۹﴾

9. और (उसे) एक ज़बान और दो होंट (नहीं दिए)?

وَهَدَيْنٰهُ النَّجْدَيْنِ ۚ﴿۱۰﴾

10. और हमने उसके (ख़ैरो शर्र के) दो नुमायां रास्ते (भी) दिखा दिए।

---

(1) येह तर्जमा ''ला झाइदह''के ए'तबार से है'' 'ला' नफी की सहीह के लिये हो तो तर्जमा यूं होगा : मैं उस वक़्त उस शहर की कसम नहीं खाऊंगा, (अय ह़बीबे !) जब आप इस शहर से रुखसत होजाएंगे।

(2) (या'नी आदम عليه السلام की ज़ुर्रिय्यते सालिहा या आप ही की झाते गिरामी जिन-के बाइस येह शहरे मक्का भी लाइके कसम ठेहरा है।)

فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ﴿١١﴾

11. वोह तो (दीने हक़ और अमले ख़ैर की) दुश्वार गुज़ार घाटी में दाख़िल ही नहीं हुवा।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْعَقَبَةُ ﴿١٢﴾

12. और आप क्या समझे हैं कि वोह (दीने हक़ के मुजाहहिदे की) घाटी क्या है।

فَكُّ رَقَبَةٍ ﴿١٣﴾

13. वोह (गुलामी और महकूमी की ज़िन्दगी से) किसी गरदन का आजाद कराना है।

اَوْ اِطْعٰمٌ فِيْ يَوْمٍ ذِيْ مَسْغَبَةٍ ﴿١٤﴾

14. या भूकवाले दिन (या'नी क़हतो इफ़लास के दौर में गरीबों और महरूमुल मईशत लोगों को) खाना खिलाना है (या'नी उनके मआशी तअत्तुल और इब्तिला को ख़त्म करने की जद्दो जहद करना है।)

يَّتِيْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ﴿١٥﴾

15. क़राबत दार यतीम को।

اَوْ مِسْكِيْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ ﴿١٦﴾

16. या शदीद गुरबत के मारे हुए मोहताज को जो महज़ ख़ाक नशीन (और बे घर) है।

ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ﴿١٧﴾

17. फिर (शर्त येह है कि ऐसी जद्दो जहद करनेवाला) वोह शख़्स उन लोगों में से हो जो ईमान लाए हैं, और एक दूसरे को सब्रो तहम्मुल की नसीहत करते हैं और बाहम रहमत् शफ़क़त की ताकीद करते हैं।

اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ﴿١٨﴾

18. येही लोग दाएं तरफ़ वाले (या'नी अहले सआदतो मग़फ़िरत) हैं।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا هُمْ اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ﴿١٩﴾

19. और जिन लोगोंने हमारी आयतों का इन्कार किया क्या वोह बाएं तरफ़वाले हैं (या'नी अहले शक़ावतो अज़ाब) हैं।

عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ ﴿٢٠﴾ ع ١ ٢٠ ١٥

20. उन पर (हर तरफ़ से) बंद की हुई आग (छाई) होगी।

आयातुहा 15 | 91 सूरतुश शम्सि 26 | रुकूउहा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

وَالشَّمْسِ وَضُحٰىهَا ﴿١﴾

1. सूरज की क़सम और उसकी रौशनी की क़सम।

وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰىهَا ﴿٢﴾

2. और चांद की क़सम जब वोह सूरज की पैरवी करे (या'नी उसकी रौशनी से चमके।)

وَالنَّهَارِ اِذَا جَلّٰىهَا ﴿٣﴾

3. और दिन की क़सम जब वोह सूरज को ज़ाहिर करे (या'नी उसे रौशन दिखाए।)

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰىهَا ﴿٤﴾

4. और रात की क़सम जब वोह सूरज को (ज़मीन की एक सम्त से) ढांप ले।

وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰىهَا ﴿٥﴾

5. और आस्मान की क़सम, और उस (कुव्वत) की क़सम जिसने उसे (इज़्ने इलाही से एक वसीअ़ काइनात की शक्ल में) ता'मीर किया।

وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰىهَا ﴿٦﴾

6. और ज़मीन की क़सम, और उस (कुव्वत) की क़सम जो उसे (अम्रे इलाही से सूरज से खींच कर दूर) ले गई।

وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰىهَا ﴿٧﴾

7. और इन्सानी जान की क़सम, और उसे हमा पेहलू तवाज़ुनो दुरुस्तगी देनेवाले की क़सम।

فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰىهَا ﴿٨﴾

8. फिर उसने उसे उसकी बद कारी और परहेज़गारी (की तमीज़) समझा दी।

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا ﴿٩﴾

9. बेशक वोह शख़्स फ़लाह पा गया जिसने उस (नफ़्स) को (रज़ाइल से) पाक कर लिया (और उसमें नेकी की नश्वो नुमा की।)

وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا ﴿١٠﴾

10.और बेशक वोह शख़्स ना मुराद हो गया जिसने उसे (गुनाहों में) मुलव्विस कर लिया और (नेकी को दबा दिया।)

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰىهَآ ﴿١١﴾

11. समूद ने अपनी सरकशी के बाइस (अपने पयग़म्बर सालेह عليه السلام को) झुटलाया।

اِذِ انْۢبَعَثَ اَشْقٰىهَا ﴿۱۲﴾

12. जबकि उनमें से एक बड़ा बद बख़्त उठा।

فَقَالَ لَهُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ نَاقَةَ اللّٰهِ وَسُقْيٰهَا ﴿۱۳﴾

13. उनसे अल्लाह के रसूलने फ़रमाया : अल्लाह की (उस) ऊंटनी और उसको पानी पिलाने (के दिन) की हिफ़ाज़त करना।

فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا ۫ فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْۢبِهِمْ فَسَوّٰىهَا ﴿۱۴﴾

14. तो उन्होंने उस (रसूल) को झुटला दिया, फिर उस (ऊंटनी) की कोंचें काट डालीं तो उनके रबने उनके गुनाह की वजह से उन पर हलाकत नाज़िल कर दी, फिर (पूरी) बस्ती को (तबाह कर के अज़ाब में सब को) बराबर कर दिया।

وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا ﴿۱۵﴾ ع ۱۵ ۱۶

15. और अल्लाह को उस (हलाकत) के अंजाम का कोई ख़ौफ़ नहीं होता।

रुकूउहा 1 | 92 सूरतुल लैलि 9 | आयातुहा 21

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ﴿۱﴾

1. रात की क़सम जब वोह छा जाए (और हर चीज़को अपनी तारीकी में छुपा ले)।

وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ﴿۲﴾

2. और दिन की क़सम जब वोह चमक उठे।

وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ﴿۳﴾

3. और उस ज़ात की (क़सम) जिसने (हर चीज़में) नर और मादह को पैदा फ़रमाया।

اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ﴿۴﴾

4. बेशक तुम्हारी कोशिश मुख़्तलिफ़ (और जुदागाना) है।

فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى ﴿۵﴾

5. पस जिसने (अपना माल अल्लाह की राह में) दिया और परहेज़गारी इख़्तियार की।

وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ﴿۶﴾

6. और उसने (इन्फ़ाक़ो तक़्वा के जरीऐ) अच्छाई या'नी दीने हक़ और आख़िरत) की तस्दीक़ की।

فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى ﴿۷﴾

7. तो हम अ़नक़रीब उसे आसानी (या'नी रज़ाए इलाही) के लिए सहूलत फ़राहम कर देंगे।

وَ اَمَّا مَنۡۢ بَخِلَ وَ اسۡتَغۡنٰی ۙ﴿۸﴾

8. और जिसने बुख़्ल किया और (राहे ह़क़में माल ख़र्च करने से) बे परवाह रहा।

وَ کَذَّبَ بِالۡحُسۡنٰی ۙ﴿۹﴾

9. और उसने (यूं) अच्छाई (या'नी दीने ह़क़ और आख़िरत) को झुटलाया।

فَسَنُیَسِّرُہٗ لِلۡعُسۡرٰی ؕ﴿۱۰﴾

10. तो हम अ़नक़रीब उसे सख़्ती (या'नी अज़ाब की तरफ़ बढ़ने) के लिए सहूलत फ़राहम कर देंगे, (ताकि वोह तेज़ी से मुस्तहिके अ़ज़ाब ठेहरे।)

وَ مَا یُغۡنِیۡ عَنۡہُ مَالُہٗۤ اِذَا تَرَدّٰی ؕ﴿۱۱﴾

11. और उसका माल उसके किसी काम नहीं आएगा, जब वोह हलाकत (के गढ़े) में गिरेगा।

اِنَّ عَلَیۡنَا لَلۡہُدٰی ۖ﴿۱۲﴾

12. बेशक राहे (ह़क़) देखना हमारे ज़िम्मे है।

وَ اِنَّ لَنَا لَلۡاٰخِرَۃَ وَ الۡاُوۡلٰی ﴿۱۳﴾

13. और बेशक हम ही आख़िरत और दुनिया के मालिक हैं।

فَاَنۡذَرۡتُکُمۡ نَارًا تَلَظّٰی ۚ﴿۱۴﴾

14. सो मैंने तुम्हें (दोज़ख़ की) आग से डरा दिया है जो भड़क रही है।

لَا یَصۡلٰىہَاۤ اِلَّا الۡاَشۡقَی ۙ﴿۱۵﴾

15. जिसमें इन्तिहाई बद बख़्त के सिवा कोई दाख़िल नहीं होगा।

الَّذِیۡ کَذَّبَ وَ تَوَلّٰی ؕ﴿۱۶﴾

16. जिसने (दीने ह़क़ को) झुटलाया और (रसूल की इताअ़त से) मुंह फेर लिया।

وَ سَیُجَنَّبُہَا الۡاَتۡقَی ۙ﴿۱۷﴾

17. और उस (आग) से उस बड़े परहेज़गार शख़्स को बचा लिया जाएगा।

الَّذِیۡ یُؤۡتِیۡ مَالَہٗ یَتَزَکّٰی ۚ﴿۱۸﴾

18. जो अपना माल (अल्लाह की राह में) देता है कि (अपने जानो माल की) पाकीज़गी ह़ासिल करे।

وَ مَا لِاَحَدٍ عِنۡدَہٗ مِنۡ نِّعۡمَۃٍ تُجۡزٰۤی ۙ﴿۱۹﴾

19. और किसी का उस पर कोई एह़सान नहीं कि जिसका बदला दिया जा रहा हो।

اِلَّا ابۡتِغَآءَ وَجۡہِ رَبِّہِ الۡاَعۡلٰی ۚ﴿۲۰﴾

20. मगर (वोह) सिर्फ़ वोह अपने रब्बे अ़ज़ीम की रज़ा जूई के लिए (माल ख़र्च कर रहा है।)

وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ﴿٢١﴾ ع ١ ١٧

21. और अ़नक़रीब वोह अल्लाह की अ़ता से और अल्लाह उसकी वफ़ा से राज़ी हो जाएगा।

आयातुहा 11 | 93 सूरतुद दुहा मक्कियतुन 11 | रुकूउहा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

وَالضُّحٰى ﴿١﴾

1. क़सम है चाश्त के वक़्तकी (जब आफ़्ताब बुलंद हो कर अपना नूर फैलाता है,)

या

(ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) क़सम है चाश्त (की तरह़ आपके चेहरए अनवर) की (जिस की ताबानीने तारीक रूहों को रौशन कर दिया।)

या

क़सम है वक़्ते चाश्त (की तरह आप के आफ़्ताबे रिसालत के बुलंद होने) की, (जिस के नूरने गुमराही के अंधेरों को उजाले से बदल दिया।)

وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ﴿٢﴾

2. और क़सम है रात की जब वोह छा जाए,

या

(ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) क़सम है सियाह रात की (तरह़ आपकी ज़ुल्फ़े अ़ंबरीं की) जब वोह (आपके रुख़े ज़ेबा या शानों पर) छा जाए,

या

क़सम है रात की (तरह़ आप के ह़िजाबे ज़ात की) जब कि वोह (आपके नूरे ह़क़ीक़त को कई परदों में) छुपाए हुए है।

مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ﴿٣﴾

3. आपके रबने (जब से मुन्तख़ब फ़रमाया है) आपको नहीं छोड़ा और न ही (जब से आपको महबूब बनाया है) नाराज़ हुवा है।

وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ﴿٤﴾

4. और बेशक (हर) बाद की घड़ी आपके लिए पहले से बेहतर (यानी बाइसे अज़मतो रिफ़अ़त) है।

وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ﴿٥﴾

5. और आपका रब अ़नक़रीब आपको (इतना कुछ) अ़ता फ़रमाएगा कि आप राज़ी हो जाएंगे।

اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ﴿٦﴾

6. (ऐ ह़बीब!) क्या उसने आपको यतीम नहीं पाया, फिर उसने (आपको मुअ़ज़्ज़ो मुकर्रम) ठिकाना दिया, या क्या उसने आपको (मेहरबान) नहीं पाया फिर उसने (आपके ज़रीए़) यतीमों को ठिकाना दिया।[1]

وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى ﴿٧﴾

7. और उसने आपको अपनी मुह़ब्बत में ख़ुद रफ़्ता व गुम पाया तो उसने मक़्सूद तक पहुंचा दिया, या और उसने आपको भटकी हुई क़ौम के दरमियान (रहनुमाई फ़रमाने वाला) पाया तो उसने (उन्हें आपके ज़रीए़) हिदायत दे दी।[2]

وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ﴿٨﴾

8. और उसने आपको (विसाले ह़क़ का) ह़ाजत मंद पाया तो उसने (अपनी लज़्ज़ते दीद से नवाज़ कर हमेशा के लिए हर तलब से) बे-नियाज़ कर दिया।

या-और उसने आपको (जव्वादो करीम) पाया तो उसने (आपके ज़रीए़) मोहताजों को ग़नी कर दिया।

فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ ﴿٩﴾

9. सो आप भी किसी यतीम पर सख़्ती न फ़रमाएं।

وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ﴿١٠﴾

10. और (अपने दर के) किसी मंगते को न झिड़कें।

---

(1), (2), (3) इन तीनों तराजिम में यतीमन को 'फ़आवा' का, 'दॉल्लन' को 'फ़-हदा' का और 'आ़इलन' को 'फ़-अग़ना' का मफ़ऊ़ले मु-क़द्दम क़रार दिया है। (मुलाहिज़ा हो : अत्तफ़्सीरुल कबीर, अल क़ुर्तुबी, अल बह्रुल मुहीत, रूहुल बयान, अश्शिफ़ा और शर्ह़े ख़फ़ाजी)

وَ اَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ﴿١١﴾ ع

11. और अपने रबकी ने'मतों का (खूब) तज़्किरा करें।

ع ١١ ١٨

आयतुहा 8 | 94 सूरतु अलम नशरह मक्किय्यतुन 12 | रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ﴿١﴾ لا

1. क्या हमने आपकी ख़ातिर आपका सीना (अनवारे इ़ल्मो ह़िक्मत और मा'रिफ़त के लिये) कुशादह नहीं फ़रमा दिया।

وَ وَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ﴿٢﴾ لا

2. और हमने आपका (ग़मे उम्मत का वोह) बार आपसे उतार दिया।

الَّذِيْٓ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ﴿٣﴾ لا

3. जो आपकी पुश्ते (मुबारक) पर गिरां हो रहा था।

وَ رَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ﴿٤﴾ ط

4. और हमने आपकी ख़ातिर आपका ज़िक्र (अपने ज़िक्र के साथ मिला कर दुनिया-व-आख़िरत में हर जगह) बुलन्द फ़रमा दिया।

فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ﴿٥﴾ لا

5. सो बेशक हर दुश्वारी के साथ आसानी (आती) है।

اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ﴿٦﴾ ط

6. यक़ीनन उस दुश्वारी के साथ (भी) आसानी है।

فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ﴿٧﴾ لا

7. पस जब आप (ता'लीमे उम्मत, तब्लीग़ो जिहाद अदायगिए फ़राइज़से) फ़ारिग हों तो (ज़िक्रो इ़बादत में) मेहनत फ़रमाया करें।

وَ اِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ﴿٨﴾ ع

8. और अपने रब की तरफ़ राग़िब हो जाया करें।

ع ١ ٨ ١٩

आयातुहा 8 | 28 सूरतुत तीनि मक्किय्यतुन 28 | रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान हमेशा रहम फ़रमाने वाला है।

وَ التِّيْنِ وَ الزَّيْتُوْنِ ﴿١﴾ لا

1. इंजीर की क़सम और ज़ैतून की क़सम।

وَ طُوْرِ سِيْنِيْنَ ﴿٢﴾ لا

2. और सीना के (पहाड़) तूर की क़सम।

وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ۙ﴿۳﴾

3. और उस अम्नवाले शहर (मक्का) क़सम।

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ۫﴿۴﴾

4. बेशक हमने इन्सानों को बेहतरीन (ए'तिदाल और तवाज़ुनवाली) साख़्त में पैदा फ़रमाया है।

ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ سٰفِلِيْنَ ۙ﴿۵﴾

5. फिर हमने उसे पस्त से पस्त तर ह़ालत में लौटा दिया।

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ؕ﴿۶﴾

6. सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे तो उनके लिए ख़त्म न होनेवाला (दाइमी) अज्र है।

فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّيْنِ ؕ﴿۷﴾

7. फिर उसके बाद कौन है जो आपको दीन (या क़ियामत और जज़ा व सज़ा) के बारे में झुटलाता है।

اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ ﴿۸﴾ ع ۱ ۸ ۲۰

8. क्या अल्लाह सब ह़ाकिमों से बड़ा ह़ाकिम नहीं है ?

आयातुहा 19 | 96 सूरतुल अ़लक़ मक्किय्यतुन 1 | रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान हमेशा रहम फ़रमाने वाला है।

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ ۚ﴿۱﴾

1. (ऐ ह़बीब!) अपने रबके नाम से (आग़ाज़ करते हुए) पढ़िए जिसने (हर चीज़को) पैदा फ़रमाया।

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۚ﴿۲﴾

2. उसने इन्सानको (रह़मे मादर में) जोंक की तरह़ मुअ़ल्लक़ वजूद से पैदा किया।

اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ۙ﴿۳﴾

3. पढ़िए और आपका रब बड़ा ही करीम है।

الَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۙ﴿۴﴾

4. जिसने क़लम के ज़रीए (लिखने पढ़ने का) इल्म सिखाया।

عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ؕ﴿۵﴾

5. जिसने इन्सान को (उसके अ़लावह भी) वोह (कुछ) सिखा दिया जो वोह नहीं जानता था।★

★ (या : जिसने (सब से बुलन्द रुत्बा) इन्सान (मुह़म्मद मुस्तफ़ा ﷺ) को (बिग़ैर ज़रीअ़ए क़लम के) वोह सारा इल्म अ़ता फ़रमा दिया जो वोह पहले न जानते थे।)

كَلَّآ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰٓى ۙ ﴿٦﴾

6. (मगर) हक़ीक़त येह है कि (ना फ़रमान) इन्सान सरकशी करता है।

اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ؕ ﴿٧﴾

7. इस बिना पर कि वोह अपने आपको (दुनिया में ज़ाहिरन) बे-नियाज़ देखता है।

اِنَّ اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ؕ ﴿٨﴾

8. बेशक (हर इन्सान को) आपके रब ही की तरफ़ लौटना है।

اَرَءَيْتَ الَّذِىْ يَنْهٰى ۙ ﴿٩﴾

9. क्या आपने उस शख़्स को देखा जो मना' करता है।

عَبْدًا اِذَا صَلّٰى ؕ ﴿١٠﴾

10. (अल्लाह के) बंदे को जब वोह नमाज़ पढ़ता है, या (अल्लाह के महबूब बरगुज़ीदह) बंदे (मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ) को जब नमाज़ पढ़ते हैं।

اَرَءَيْتَ اِنْ كَانَ عَلَى الْهُدٰٓى ۙ ﴿١١﴾

11. भला देखिए तो अगर वोह हिदायत पर होता।

اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰى ؕ ﴿١٢﴾

12. या वोह (लोगों को) परहेज़गारी का हुक्म देता (तो क्या ख़ूब होता)।

اَرَءَيْتَ اِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ؕ ﴿١٣﴾

13. आप बताइये ! अगर उसने (दीने हक़ को) झुटलाया है और (आपसे) मुंह फेर लिया है (तो उसका क्या ह़श्र होगा) ?

اَلَمْ يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ؕ ﴿١٤﴾

14. क्या वोह नहीं जानता कि अल्लाह (उसके सारे किर्दार को) देख रहा है ?

كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ ۙ۬ لَنَسْفَعًاۢ بِالنَّاصِيَةِ ۙ ﴿١٥﴾

15. ख़बरदार ! अगर वोह (गुस्ताख़े रिसालत और दीने हक़ की अ़दावत से) बाज़ न आया तो हम ज़रूर (उसे) पेशानी के बालों से पकड़ कर घसीटेंगे।

نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۚ ﴿١٦﴾

16. वोह पेशानी जो झूटी (और) ख़ताकार है।

فَلْيَدْعُ نَادِيَهٗ ۙ ﴿١٧﴾

17.पस वोह अपने हम नशीनों को (मदद के लिए) बुला ले।

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ۙ ﴿١٨﴾

18. हम भी अ़नक़रीब अपने सिपाहियों या'नी दोज़ख़ के अज़ाब पर मुक़र्रर फ़रिश्तों को बुला लेंगे।

كَلَّا ؕ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ۩ ﴿١٩﴾ ع ١٩/٢١ السجدة ١٣

19. हरगिज़ नहीं ! आप उसके किए की परवाह न कीजिए, और (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) आप सर ब-सुजूद रेहने और (हमसे मज़ीद) क़रीब होते जाइए।

आयातुहा 5 | 97 सूरतुल क़द्रि मक्किय्यतुन 25 | रुकूउ़हा 5

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान हमेशा रहम फ़रमाने वाला है।

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۝١

1. बेशक हमने इस (क़ुरआन) को शबे क़द्र में उतारा है।

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۝٢

2. और आप क्या समझे हैं (कि) शबे क़द्र कया है?

لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۙ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ۝٣

3. शबे क़द्र (फ़ज़ीलतो बरकत और अज्रो सवाब में) हज़ार महीनों से बेहतर है।

وقف النبی صلی اللہ علیہ وسلم

تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ مِنْ كُلِّ اَمْرٍ ۝٤

4. इस (रात में फ़रिश्ते और रूहुल अमीन (जिब्राईल) अपने रब के हुक्म से उतरते हैं।

معانقة ١٨

سَلٰمٌ ۛ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۝٥

5. येह (रात) तुलूए फ़ज्र तक (सरासर) सलामती है।

ع ١ ٥ ٢٢ القدر

आयातुहा 8 | 98 सूरतुल बय्यिनति मक्कियतुन 100 | रुकूउ़हा 8

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝١

1. अहले किताब में से जो लोग काफ़िर हो गए, और मुशरिकीन उस वक़्त तक (कुफ़्र से) अलग होनेवाले न थे जब तक उनके पास रौशन दलील (न) आ जाती।

رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۝٢

2. (वोह दलील) अल्लाह की तरफ़ से रसूल (आखिरुज़ ज़मां ﷺ) हैं जो (उन पर) पाकीज़ा औराक़ (क़ुरआन) की तिलावत फ़रमाते हैं।

فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ۝٣

3. जिन में दुरुस्त और मुस्तह़कम अह़काम (दर्ज) हैं।

وَ مَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ﴿۴﴾

4. (उन) अहले किताब में (नबिय्ये आख़िरुज़ ज़मां ﷺ की नुबुव्वतो रिसालत पर ईमान लाने और आपकी शाने अ़क़्दस का पेहचानने के बारे में पहले) कोई फूट न पड़ी थी, मगर उस के बाद जब (बे'सते मुह़म्मदी ﷺ की) रौशन दलील उनके पास आ गई (तो वोह बाहम बट गए कोई उन पर ईमान ले आया और कोई ह़सद के बाइस मुन्किरो काफ़िर हो गया)।

وَ مَاۤ اُمِرُوْۤا اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۙ۬ حُنَفَآءَ وَ يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَ يُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَ ذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ﴿۵﴾

5. हालांकि उन्हें फ़क़त येही हुक्म दिया गया था कि सिर्फ़ उसीके लिए अपने दीन को ख़ालिस करते हुए अल्लाह की इ़बादत करें, (हर बातिल से जुदा हो कर) ह़क़ की तरफ़ यकसूई पैदा करें और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात दिया करें और येही सीधा और मज़बूत दीन है।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَ الْمُشْرِكِيْنَ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ اُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ﴿۶﴾

6. बेशक जो लोग अहले किताब में से काफ़िर हो गए और मुश्रेकीन (सब) दोज़ख की आग में (पड़े) होंगे, वोह हमेशा उसी में रेहनेवाले हैं, येही लोग बद तरीन मख़लूक़ हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ﴿۷﴾

7. बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे वही लोग सारी मख़लूक से बेहतर हैं।

جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ﴿۸﴾ ع ۱ ۸ ۲۳

8. उन की जज़ा उनके रबके हुज़ूर दाइमी रिहाइश के बाग़ात हैं जिनके नीचे से नेहरें रवां हैं, वोह उनमें हमेशा हमेशा रहेंगे, अल्लाह उन से राज़ी हो गया है, और वोह लोग उससे राजी हैं, येह (मुक़ाम) उस शख़्स के लिए है जो अपने रबसे ख़ाइफ़ रहा।

आयातुहा 8 | 99 सूरतुज़ ज़िल्ज़ालि म-दनिय्यतुन 93 | रुकूउहा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ۙ﴿۱﴾

1. जब ज़मीन अपने सख़्त भोंचाल से बड़ी शिद्दत के साथ थरथराई जाएगी।

وَاَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا ۙ﴿۲﴾

2. और ज़मीन अपने (सब) बोझ निकाल बाहर फेंकेगी।

وَقَالَ الْاِنْسَانُ مَالَهَا ۚ﴿۳﴾

3. और इन्सान (हैरानो शश्दर) हो कर कहेगा : इसे क्या हो गया है।

يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا ۙ﴿۴﴾

4. उस दिन वोह अपने ह़ालात खुद ज़ाहिर कर देगी।

بِاَنَّ رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا ؕ﴿۵﴾

5. इस लिए आपके रबने उसके लिए तेज़ इशारों (की ज़बान) को मुसख़्ख़र फ़रमा दिया।

يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ۙ لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ؕ﴿۶﴾

6. उस दिन लोग मुख़्तलिफ़ गिरोह बन कर (जुदा जुदा ह़ालतों के साथ) निकलेंगे ताकि उन्हें उनके आ'माल भी दिखाए जाएं।

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ؕ﴿۷﴾

7. तो जिसने ज़र्रह भर नेकी की होगी वोह उसे देख लेगा।

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ﴿۸﴾ ع

8. और जिसने ज़र्रह भर बुराई की होगी वोह उसे (भी) देख लेगा।

ع ۱ ۸ ۲۴

आयातुहा 11 | 100 सुरतूल आ़दियाति मक्किय्यतुन 14 | रुकूउहा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۙ﴿۱﴾

1. (मैदाने जिहाद में) तेज़ दौड़नेवाले घोड़ों की क़सम जो हांपते हैं।

فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۙ ﴿۲﴾

2. फिर जो पथ्थरों पर सुम मार कर चिंगारियां निकालते हैं।

فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ۙ ﴿۳﴾

3. फिर जो सुब्ह़ होते ही (दुश्मन पर) अचानक ह़मला कर डालते हैं।

فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۙ ﴿۴﴾

4. फिर वोह उस (ह़म्लेवाली) जगह से गर्दो ग़ुबार उड़ाते हैं।

فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۙ ﴿۵﴾

5. फिर वोह उसी वक़्त (दुश्मन के) लश्कर में घुस जाते हैं।

اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ۚ ﴿۶﴾

6. बेशक इन्सान अपने रब का बड़ा ही नाशुक्रा है।

وَاِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۚ ﴿۷﴾

7. और यक़ीनन वोह इस (ना शुक्री) पर खुद गवाह हैं।

وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ۗ ﴿۸﴾

8. और बेशक वोह माल की मुहब्बत में बहुत सख़्त हैं।

اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِى الْقُبُوْرِ ۙ ﴿۹﴾

9. तो क्या उसे मा'लूम नहीं जब वोह (मुर्दे) उठाए जाएंगे जो कब्रों में हैं ?

وَحُصِّلَ مَا فِى الصُّدُوْرِ ۙ ﴿۱۰﴾

10. और (राज़) ज़ाहिर कर दिए जाएंगे जो सीनों में हैं ?

اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيْرٌ ۧ ﴿۱۱﴾

11. बेशक उनका रब उस दिन (उनकेआ'माल) से खूब ख़बरदार होगा।

आयातुहा 11	101 सुरतूल क़ारिअ़ति मक्किय्यतुन 30	रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

اَلْقَارِعَةُ ۙ ﴿۱﴾

1. (ज़मीनो आस्मान की सारी काइनात को) खड़खड़ा देनेवाला शदीद झटका और कड़क।

مَا الْقَارِعَةُ ۚ ﴿۲﴾

2. वोह (हर शय को) खड़खड़ा देनेवाला शदीद झटका और कड़क कया है ?

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ۗ ﴿۳﴾

3. और आप क्या समझे हैं कि (हर शय को) खड़खड़ा देनेवाले शदीद झटके और कड़क से मुराद क्या है ?

يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ ﴿٤﴾

4. (इससे मुराद) वोह यौमे क़ियामत है जिस दिन (सारे) लोग बिखरे हुए परवानों की तरह होजाएंगे।

وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنفُوشِ ﴿٥﴾

5. और पहाड़ रंग बिरंगी धुन्की हुई ऊन की तरह हो जाएंगे।

فَأَمَّا مَن ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ﴿٦﴾

6. पस वोह शख़्स जिस (के आ'माल) के पलड़े भारी होंगे।

فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ﴿٧﴾

7. तो वोह ख़ुश गवार ऐ़शो मसर्रत में होगा।

وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ﴿٨﴾

8. और जिस शख़्स के (आ'माल के) पलड़े हल्के होंगे।

فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ﴿٩﴾

9. तो उसका ठिकाना हा़विया (जहन्नम का गढ़ा) होगा।

وَمَا أَدْرَاكَ مَا هِيَهْ ﴿١٠﴾

10. और आप क्या समझे हैं कि हा़विया क्या है?

نَارٌ حَامِيَةٌ ﴿١١﴾ ع

11. (वोह जहन्नम की) सख़्त दहकती (आगका इन्तिहाई घडा है।

आयातुहा 8	102 सूरतुत तकासुरि मक्किय्यतुन 16	रुकूहा 1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

أَلْهَاكُمُ التَّكَاثُرُ ﴿١﴾

1. तुम्हें कसरत से माल की हवस और फ़ख़्रने (आख़िरत से) ग़ाफ़िल कर दिया।

حَتَّىٰ زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ﴿٢﴾

2. यहां तक कि तुम क़ब्रों में जा पहोंचे।

كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٣﴾

3. हरगिज़ नहीं! (मालो दौलत तुम्हारे काम नहीं आएंगे,) तुम अ़नक़रीब (इस ह़क़ीक़त को) जान लोगे।

ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٤﴾

4. फिर (आगाह किया जाता है) हरगिज़ नहीं : अ़नक़रीब तुम्हें (अपना अंजाम) मा'लूम हो जाएगा।

كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ۝٥

5. हां हां ! काश तुम (मालो ज़र की हवस और अपनी ग़फ़लत के अंजाम को) यक़ीनी इल्म के साथ जानते (तो दुनिया में खो कर आख़िरत को इस तरह न भूलते।)

لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ۝٦

6. तुम (अपनी हिर्स के नतीजे में) दोज़ख़ को ज़रूर देख कर रहोगे।

ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۝٧

7. फिर तुम उसे ज़रूर यक़ीन की आंख से देख लोगे।

ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ۝٨ ع ١ ٨ ٢٧

8. फिर उस दिन तुम से (अल्लाह की) ने'मतों के बारे में ज़रूर पूछा जाएगा (कि तुमने उन्हें कहां कहां और कैसे कैसे ख़र्च किया था)।

आयातुहा 3 | 103 सुरतुल अ़सरि मक्किय्यतुन 13 | रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

وَالْعَصْرِ ۝١

1.ज़माने की क़सम (जिसकी गरदिश इन्सानी हालत पर गवाह है,) या नमाज़े अ़स्र की क़सम (कि वोह सब नमाज़ो का वस्त है,) या वक़्ते अ़सर की क़सम (जब दिन भर चमकनेवाला सूरज खुद डूबने का मन्ज़र पेश करता है, या ज़मानए बे'सते मुस्तफ़ा ﷺ की क़सम (जो सारे ज़मानों का मा मा ह़स्लो और मक़्सूद है।)

اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۝٢

2. बेशक इन्सान ख़सारे में है (कि उम्रे अज़ीज़ गंवा रहा है।)

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ تَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝٣ ع ١ ٣ ٢٨

3. सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे (और मुआ़शरे में) एक दूसरे को ह़क़ की तल्क़ीन करते रहे और (तब्लीगे़ ह़क़ के नतीजे में पेश आमदह मसाइबो आलाम में) बाहम सब्र की ताकीद करते रहे।

आयातुहा 9 | 104 सूरतुल हु-म-ज़ति मक्कियतुन 32 | रुकूउ़हा 1

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

وَیۡلٌ لِّکُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِۣ ﴿۱﴾

1. हर उस शख़्स के लिए हलाकत है जो (रूबरू) ता'ना ज़नी करने वाला है (और पसे पुश्त) ऐब जूई करने वाला है।

الَّذِیۡ جَمَعَ مَالًا وَّ عَدَّدَهٗ ﴿۲﴾

2. (ख़राबी व तबाही है उस शख़्स के लिए) जिसने माल जमा' किया और उसको गिन गिन कर रखता है।

یَحۡسَبُ اَنَّ مَالَهٗۤ اَخۡلَدَهٗ ﴿۳﴾

3. वोह येह गुमान करता है कि उसकी दौलत उसे हमेशा ज़िन्दह रखेगी।

کَلَّا لَیُنۡۢبَذَنَّ فِی الۡحُطَمَةِ ﴿۴﴾

4. हरगिज़ नहीं ! वोह ज़रूर हु-तमह (या'नी चूरा चूरा करदेने वाली आग) में फेंक दिया जाएगा।

وَ مَاۤ اَدۡرٰىكَ مَا الۡحُطَمَةُ ﴿۵﴾

5. और आप क्या समझे हैं कि हु-त-मह (चूरा चुरा कर देनेवाली आग) क्या है?

نَارُ اللّٰهِ الۡمُوۡقَدَةُ ﴿۶﴾

6. येह अल्लाह की भड़काई हुई आग है।

الَّتِیۡ تَطَّلِعُ عَلَی الۡاَفۡـِٕدَةِ ﴿۷﴾

7. जो दिलों पर (अपनी अज़िय्यत के साथ) चढ़ जाएगी।

اِنَّهَا عَلَیۡهِمۡ مُّؤۡصَدَةٌ ﴿۸﴾

8. बेशक वोह (आग) उन लोगों पर हर तरफ़ से बन्द कर दी जाएगी।

فِیۡ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ﴿۹﴾ ع ۱ ۹ ۲۹

9. (भड़कते हुए शो'लों के) लम्बे लम्बे सुतूनों में (और उन लोगों के लिए कोई राहे फ़रार न रहेगी।)

आयातुहा 5 | 105 सूरतुल फ़ीलि मक्कियतुन 19 | रुकूउ़हा 1

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

اَلَمۡ تَرَ کَیۡفَ فَعَلَ رَبُّكَ

1. क्या आपने नहीं देखा कि आपके रब ने हाथीवालों के

بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ؕ ①

साथ क्या सुलूक किया?

اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ۙ ②

2. क्या उसने इनके मक्रो फ़रेब को बातिलो ना काम नहीं कर दिया?

وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۙ ③

3. और उसने उस पर (हर सम्त से) परिन्दों के झुंड के झुंड भेज दिए।

تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۪ۙ ④

4. जो उन पर कंकरीले पथ्थर मारते थे।

فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ع ⑤

5. फिर (अल्लाह ने) उन्हें खाए हुए भूसे की तरह पामाल कर दिया।

आयातुहा 4	106 सुरतु कुरैशिन मक्किय्यतुन 29	रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۙ ①

1. क़ुरैश को रग़बत दिलाने के सबब से।

اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۚ ②

2. उन्हें सरदियों और गरमियों के (तिजारती) सफ़र से मानूस कर दिया।

فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۙ ③

3. पस उन्हें चाहिए कि उस घर (ख़ानए का'बा) के रब की इ़बादत करें (ताकि उसकी शुक्र गुज़ारी हो।)

الَّذِيْۤ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ۬ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ع ④

4. जिसने उन्हें भूक (या'नी फ़क्रो फ़ाक़ा के हालात) में खाना दिया (या'नी रिज़्क़ फ़राहम किया) और (दुश्मनों के) ख़ौफ़ से अम्न बख़्शा (या'नी महफ़ूज़ो मामून ज़िन्दगी से नवाज़ा।)

आयातुहा 7	107 सूरतुल माऊ़नि मक्किय्यतुन 17	रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ؕ ①

1. क्या आपने उस शख़्स को देखा जो दीन को झुटलाता है?

فَذٰلِكَ الَّذِيْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ۙ﴿۲﴾

2. तो येह वोह शख़्स है जो यतीम को धक्के देता है (या'नी यतीमों की ह़ाजात को रद करता और उन्हें ह़क़ से मह़रूम रखता है।)

وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ؕ﴿۳﴾

3. और मोह़ताज को खाना खिलाने की तरग़ीबा नहीं देता (या'नी मुआशरे से ग़रीबों और मोह़ताजों का मआ़शी इस्तेह़साल के ख़ातमे की कोशिश नहीं करता।)

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۙ﴿۴﴾

4. पस अफ़्सोस (और ख़राबी) है उन नमाज़ियों के लिए।

الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۙ﴿۵﴾

5. जो अपनी नमाज़ (की रूह़) से बे ख़बर हैं (या'नी उन्हें मह़ज़ हुक़ूक़ुल्लाह याद हैं हुक़ूक़ुल इबाद भुला बैठे हैं।)

الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۙ﴿۶﴾

6. वोह लोग (इ़बादत में) दिखलावा करते हैं (क्यों कि वोह ख़ालिक़ की रस्मी बन्दगी बजा लाते हैं और पिसी हुई मख़्लूक़ से बे-परवाही बरत रहे हैं।)

وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ۧ﴿۷﴾ ع ٣٢

7. और वोह बरतने की मा'मूली सी चीज़ भी मांगने नहीं देते।

आयातुहा 3 | 08 सूरतुल कौसरि मक्किय्यतुन 15 | रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ؕ﴿۱﴾

1. बेशक हमने आपको (हर ख़ैरो फज़ीलत में) बे-इन्तिहा कसरत बख़्शी है। ★

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ؕ﴿۲﴾

2. पस आप अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ा करें और क़ुरबानी दिया करें (येह हदियए तशक्कुर है।)

اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ۧ﴿۳﴾ ع ٣٣

3. बेशक आपका दुश्मन ही बे-नस्ल और बे-नामो निशां होगा।

★ कौसर से मुराद होज़े कौसर या नेहरे जन्नत भी है और क़ुरआन और नुबुव्वत व हिकमत भी, फ़ज़ाइल व मो'जेज़ात की कसरत या अस्हाब व इत्तेबा' और उम्मत की कसरत भी मुराद ली गई है, रिफअते झिक्र और खुल्के अज़ीम भी मुराद है और दुनिया व आखिरत की ने'मतें भी, नुसरते इलाहिय्या और कसरते फुतूहात भी मुराद हैं, और रोझे क़ियामत मकामे मह्मूद और शफाअते उझमा भी मुराद ली गई है।

आयातुहा 6 | 109 सूरतुल काफ़िरून मक्किय्यतुन 18 | रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ ١

1. आप फ़रमा दीजिए : ऐ काफ़िरो।

لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ ٢

2. मैं उन बुतों की इ़बादत नहीं करता जिन्हें तुम पूजते हो।

وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۚ ٣

3. और न तुम उस (रब) की इ़बादत करनेवाले हो जिस की मैं इ़बादत करता हूं।

وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ ٤

4. और न (ही) मैं (आइन्दह कभी) उनकी इ़बादत करनेवाला हूं जिन (बुतों) की तुम परस्तिश करते हो।

وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۗ ٥

5. और न (ही) तुम उसकी इ़बादत करनेवाले हो जिस (रब) की मैं इ़बादत करता हूं।

لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ٦ ع ٦ ٣٤

6. (सो) तुम्हारा दीन तुम्हारे लिए और मेरा दीन मेरे लिए है।

आयातुहा 3 | 110 सूरतुन नस्त्रि मदनिय्यतुन 114 | रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۙ ١

1. जब अल्लाह की मदद और फ़तह़ आ पहुंचे।

وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ
دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۙ ٢

2. और आप लोगों को देख लें (कि) वोह अल्लाह के दीनमें जोक़ दर जोक़ दाख़िल हो रहे हैं।

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ۗ وقف النبي صلى الله عليه وسلم
اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ٣ ع ٣ ٣٥

3. तो आप तशक्कुरन अपने रबकी ह़म्द के साथ तस्बीह़ फ़रमाएं और (तवाज़ुअ़न) उससे इस्तिग़फ़ार करें, बेशक वोह बड़ा ही तौबा क़बूल फ़रमानेवाला (और मज़ीद रह़्मत के साथ रुजूअ़ फ़रमानेवाला) है।

आयातुहा 5 | 111 सूरतुल-ल-हब मक्किय्यतुन 6 | रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ۝١

1. अबू लहब के दोनों हाथ टूट जाएं और वोह तबाह हो जाए (उसने हमारे ह़बीब पर हाथ उठाने की कोशिश की है)।

مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ۝٢

2. उसे उसके (मौरूसी) मालने कुछ फ़ाइदा न पहुंचाया और न ही उसकी कमाईने।

سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝٣

3. अ़नक़रीब वोह शो'लों वाली आगमें जा पड़ेगा।

وَّامْرَاَتُهٗ ؕ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝٤

4.और उसकी (ख़बीस) औ़रत (भी) जो (कांटेदार) लकड़ियों का बोझ (सर पर) उठाए फिरती है। (और हमारे ह़बीब के तल्वों को ज़ख़्मी करने के लिए रातको उन की राहोंमें कांटे बिछाती है)।

فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۝٥

5. उसकी गरदनमें खजूरकी छालका (वोही) रस्सा होगा (जिस से कांटों का गठ्ठा बांधती है)।

ع ١ ٥ ٣٦

आयातुहा 4 | 112 सूरतुल इख़्लास मक्किय्यतुन 22 | रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝١

1. (ऐ नबिय्ये मुकर्रम!) आप फ़रमा दीजिए : वोह अल्लाह है जो यक्ता है।

اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝٢

2. अल्लाह सब से बेनियाज़, सबकी पनाह और सब पर फ़ाइक़ है।

لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝٣

3. न उससे कोई पैदा हुवा है और न ही वोह पैदा किया गया है।

وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝٤

4. और न ही उसका कोई हमसर है।

ع ١ ٤ ١٢

आयातुहा 5 | 113 सूरतुल फ़लक़ि मक्किय्यतुन 20 | रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ﴿۱﴾

1. आप अ़र्ज़ कीजिए कि मैं (एक) धमाके से इन्तिहाई तेज़ी के साथ (काइनातको) वुजूदमें लानेवाले रब की पनाह मांगता हूं।

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ﴿۲﴾

2. और हर उस चीज़ के शर्र (और नुक़्सान) से जो उसने पैदा फ़रमाई है।

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ﴿۳﴾

3. और बिल ख़ुसूस अंधेरी रात के शर्र से जब उसकी ज़ुल्मत छा जाए।

وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ ۙ﴿۴﴾

4. और गिर्हों में फूंक मारनेवाली जादूगरनियों (और जादूगरों) के शर्र से।

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿۵﴾ ع ١ ٥ ٣٨

5.और हर ह़सद करनेवाले के शर से जब वोह ह़सद करे।

आयातुहा 6 | 114 सूरतुन नास मक्किय्यतुन 21 | रुकूउ़हा 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾

1. आप अ़र्ज़ कीजिए कि मैं (सब) इन्सानों के रब की पनाह मांगता हूं।

مَلِكِ النَّاسِ ۙ﴿۲﴾

2. जो (सब) लोगों का बादशाह है।

اِلٰهِ النَّاسِ ۙ﴿۳﴾

3. जो (सारी) नस्ले इन्सानी का मा'बूद है।

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ۬ الْخَنَّاسِ ۪ۙ﴿۴﴾

4. वस्वसा अंदाज़ (शैतान) के शर्र से जो (अल्लाह के ज़िक्र के असर से) पीछे हट कर छुप जानेवाला है।

الَّذِیْ یُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ﴿۵﴾

5.जो लोगों के दिलों में वस्वसा डालता है।

مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ ﴿۶﴾ ع ١ ٦ ٣٩

6. (ख़्वाह वोह वस्वसा अंदाज़ शैतान) जिन्नातमें से हो या इन्सनों में से।